अप्रैल 2010 ▪ Rs.20/-

चन्दामामा

क्या वे दोनों समुद्री लुटेरों के चंगुल से सबको बचा पाएंगे? जानिए अगले अंक में.

Visit : www.chandamama.com/parle

चौथा फोल्ड

To,
Boomer T20 Mania,
PB No. 28,
Okhla Industrial Estate-3,
New Delhi - 110020

कृपया
स्टैम्प
चिपकाएं

दूसरा फोल्ड

तीसरा फोल्ड

पहला फोल्ड

*नियम व शर्तें लागू.

नाम ~~SHARAD~~

पता ~~HYDERABAD~~

फोन नं. ____________________

Email id. ____________________

स्लोगन ____________________

OFFICIAL BUBBLEGUM OF

www.BOOMERFUNZONE.com

निर्देशः
- बिन्दूदार लाइन से काटें
- फिर पहले फोल्ड से मोड़ने के बाद, दूसरे, तीसरे और अंत में ऊपर से चौथे फोल्ड को मोड़ें
- आपका लिफ़ाफा तैयार है
- एक बार रैपर अंदर रखने के बाद, लिफ़ाफा बंद करने के लिए मोड़े गए फोल्डस को चिपकाएं
- अब इस पर स्टैम्प लगाकर, हमारे पास भेजें

सम्पुट-६१ अप्रैल २०१० सञ्चिका-४

नाम.................................... आयु ....

पता..

....

....

फोन................. ई-मेल...............................

अपनी पत्रिका का मूल्यांकन कीजिए!

विषम के पास दी गमी बॉक्स को टिक कीजिए, बिन्दु रेखाओं से काटिए और अपना फीडबैक हमें भेजिए।

उत्कृष्ट	सर्वोत्तम	बेहतर	अच्छा	सामान्य
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',
MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

H

अंतरंग

चन्दामामा

०६ पाठकों का पन्ना
०८ वैद्य की होशियारी
१० चिंता का रहस्य

क्लासिकी

११ दिव्य पुष्प
१७ आर्य-२
२१ उत्तरकाण्ड
२७ मित्र भेद-५
३१ अनन्सी और भृंगी कीट

क्रियाकलाप

३४ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता
३५ तेज़ फार्मूला
३६ चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१५
३७ यूरेका

लघु कथाएँ

३८ शास्त्रज्ञान - लोकज्ञान
३९ स्वर्ग - नरक
४० सेर को सवा सेर
४३ मालिक और नौकर
४७ खजांची का चयन

भारत निर्देशिका

४९ भारत दर्शक
५० चूँ चूँ का डिब्बा
५२ अग्नि पंख

धारावाहिक

५७ शिथिलालयम
६३ अनुनिर्वा

समाचार

६९ समाचार झलक
७० उदीयमान सितारा

विविध

७१ हँसते-हँसते हो जा लोटपोट
७२ टीवी के लिए सब-कुछ!

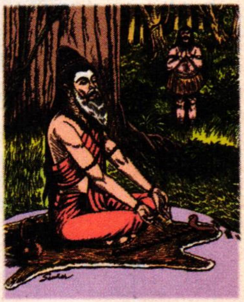

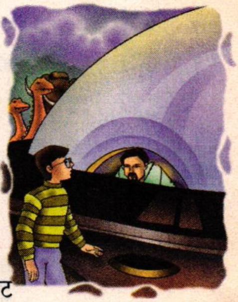

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

लो आ गई छुट्टियाँ!

हेलो दोस्तों!

छुट्टियाँ ऐन सामने हैं। और समझो हम उनका द्वार ही खटखटा रहे हैं, उम्मीदें लगाए, खिली धूप में आनन्द लेने और दो महीने तक हर समस्या को भूलकर बस उल्लास में खो जाने के लिए। महीनों की मेहनत और तैयारी के बाद, अब हम सभी को राहत हुई। अंततः परीक्षाएँ खत्म हो गई हैं। लेकिन आराम कहाँ! अब इस थोड़े से समय का पूरा-पूरा मज़ा भी तो लेना है... और इसके लिए इन छुट्टियों में क्या-क्या करना है इसका प्लान बनाना होगा। तो चलो, क्या-क्या करना है इसकी सूची बना लें - जैसे चन्दामामा पढ़ना, अलग-अलग जगहें देखना, रिश्तेदारों और दोस्तों से मिलना, खेलना वगैरह। यह भी तो हो सकता है कि स्कूल के टाइम-टेबल की तरह छुट्टियों का टाइम-टेबल बना लें? और छुट्टियाँ खत्म होने के बाद हम याद करेंगे इन स्मृतियों को...और उस आनन्द को जो हमने इन दिनों में लिया।

जैसा कि हमने वादा किया था, छुट्टियों के शुरु होने के साथ ही, हमने भारतीय लोक-कथाओं के संग्रह, चन्दामामा वार्षिक का अनावरण किया है, और साथ ही इन लोक-कथाओं की ऑडियो-सीडी का भी। हालाँकि यह महीना अप्रैल फूल केदिन से शुरु हो रहा है, लेकिन यह मज़ाक नहीं...ये पूरी तरह सच है!! साथ ही, हम बड़े गर्व से आपके लिए प्रस्तुत कर रहे हैं हमारी आर्टबुक - हमारे महान कलाकारों की पेंटिंग्स का एक संग्रह।

ईसा मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने का दिन, गुड फ्रायडे, २ अप्रैल को है और उसके बाद ईस्टर के रविवार को उनके पुनर्जन्म का दिन। ये दोनों ही दिन हमारे ईसाई दोस्तों के लिए बहुत महत्व के दिन हैं। ७ अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस है। सारी दुनिया में बढ़ रही स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों को देखते हुए यह बहुत आवश्यक है कि हम इस दिन थोड़ा रुककर सोचें। हमें यह जानना चाहिए कि जीवनभर स्वस्थ रहने के लिए हमें क्या करना होगा।

और हाँ, हम चाहेंगे कि आप हमारी नई किताबें पढ़ें और हमें फीडबैक दें। और तब तक, इस महीने का ख़ज़ाना आपके लिए यह रहा...

-संपादक

अप्रैल २०१० Rs. 20/-
Founded by **B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher : Prashant Mulekar
Associate Editors : Sowmya Rajendran, R. Vaasugi
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : Venki
Creative Designer : Meghana Vaidyanathan
Creative Writers : S. Niveditha, R. Rama
Layout Designers : B. Thirumal, K. Narendra
Sanjay B Thorat : Head - Sales and Circulation
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone : +91 22 28312872 / 28311849
Mobile : +91 9821017787
email : sanjay.thorat@chandamama.com
AB Sairam : Manager - Sales & Circulation
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
2/513(Old 3/396), SundeepAvenue Eest, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041
Mobile : +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Mr. Vinay K Brid : Manager - Sales & Circulation
Mobile : +91 9869574816
Rajendra K Jadhav : Asst. Manager - Circulation
Mobile +91 9320565048
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
Subhankar Rej, Asst. Manager - Sales & Circulation
email: subhankar.rej@chandamama.com
Mobile +91 9474916267
Bengaluru : CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
Chennai : K. Ravishankar, Sales Officer - Circulation, Mobile +91 98414 00981
email : ravishankar.k@chandamama.com
Business Development : Ananth Prakash
Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Content Head - Online : Sowmya Bharadwaj
email : online@chandamama.com
Marketing Enquiries :
email : marketing@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Subscription Queries:
email : subscription@chandamama.com
Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093. Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

मेरे घर की दो पीढ़ियाँ चन्दामामा के साथ बड़ी हुई हैं। घर के बड़े की ही तरह चन्दामामा ने हमारा मार्गदर्शन किया है। पूर्व में चन्दामामा की कहानियाँ कुछ इस प्रकार की थीं जैसे किसी शान्त से गाँव के सन्तोषी जीवन की रोजमर्रा की झलक हमारे सामने प्रस्तुत की जा रही हो। वक्त के साथ कुछ परिवर्तन आए हैं। हमारी पीढ़ी को शायद ये परिवर्तन उतने अच्छे न लगें किन्तु नयी पीढ़ी अवश्य विज्ञान और आजकल के जीवन की झलक प्रस्तुत करने वाली कहानियों की ओर आकृष्ट होती है। समय के साथ बखूबी बदलने के लिए चन्दामामा का अभिनन्दन।

- कृपाल सिंह पुंढीर, लखनऊ

अनुनिर्वा की कहानी बहुत आकर्षक बन पड़ी है। कहानी का आइडिया नया है लेकिन बच्चों और बड़ों ने इसे एक जैसी उत्सुकता से पढ़ा और ये लेखिका की सफलता है। वर्षों बाद कोई ऐसी कहानी आई है जिसपर घर की बैठक में बैठकर चर्चा हुई, अन्यथा ये सम्मान आजकल केवल टीवी सीरियलों को ही मिलता है।

- अनुष्का, नोएडा

चन्दामामा की कहानियों में पिछले कुछ समय से बहुत सी ग़लतियाँ छप रही हैं। चन्दामामा के चाहने वालों के लिए इसका स्वरुप और गुणवत्ता उच्च रहना बहुत मायने रखता है। कृपया ध्यान दें।

- अतुल कुमार, रुद्र प्रयाग

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं।

Visit us at : http://hindi.chandamama.com

चांदी का दीपदान

हेलापुरी की अदालत में चांदी के एक दीपदान की चोरी का मुकद्दमा चल रहा था। जिस केशव नामक व्यक्ति के दीपदान की चोरी हो गयी थी, उसने न्यायाधीश से कहा, ''साहब, वह श्रावण में शुक्रवार का दिन था। मेरी-पत्नी ने व्रत रखा और कुछ सुहागिनियों को अपने घर बुलाया। व्रत जब पूरा हुआ और सबके सब चले गये तब उसे मालूम पड़ा कि दीपदान को किसी ने चुरा लिया है। यह चोरी किसी और ने नहीं, स्वयं माधव की पत्नी गुणवती ने की।'' यों वह कहता ही जा रहा था, तब न्यायाधीश ने उसे टोका और पूछा, ''तुम्हें कैसे संदेह हुआ कि उस दीपदान की चोरी माधव की पत्नी गुणवती ने ही की?''

''साहब, एक सप्ताह के पहले गुणवती के घर में एक जो शुभकार्य हुआ, उसमें भाग लेने मेरी पत्नी भी गयी। पूजा में रखे गये उस दीपदान को मेरी पत्नी ने पहचान लिया। कृपया वह दीपदान मुझे दिलाइये।'' केशव ने विनती की।

''इसका क्या ठोस आधार है कि वह दीपदान तुम्हारा ही है?'' न्यायाधीश ने पूछा।

''साहब, हमारे दीपदान का आकार थोड़ा-सा अलग है। वह ॐ आकार में है।'' केशव ने कहा। न्यायाधीश ने हँसते हुए कहा, ''ऐसी बात है! हमारे घर में भी ॐ आकार का एक दीपदान है।''

''साहब, यही बात मैं आपसे बताने जा रहा था। आपके टोकने की वजह से मैं बता नहीं पाया। हाल ही में मालूम हुआ कि माधव की पत्नी ने जिस दीपदान को मेरे घर से चुराया, उसे उसने आपकी पत्नी को बेच दिया। वह दीपदान अब उसके घर में नहीं, आपके घर में हैं।'' केशव ने कहा।

यह सुनकर न्यायाधिकारी और वहाँ उपस्थित सब लोग स्तब्ध रह गये। - नाग भैरव

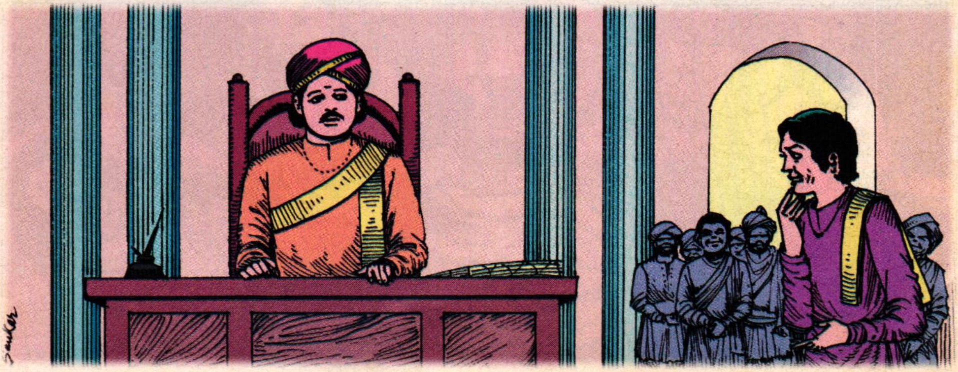

वैद्य की होशियारी

एक दिन वैद्य अनन्ताचार्य अपनी पुत्री का रिश्ता करने के विचार से अपने पड़ोसी गाँव में गए। वहाँ पर उनकी अपने गाँव के एक आदमी से मुलाकात हो गई। उसने कहा कि उसके गाँव का जमींदार रामसिंह बुखार से पीड़ित है। यह ख़बर सुनते ही अनन्ताचार्य तुरन्त मोल भाव तक किये बिना घोड़ागाड़ी वाले के हाथ में एक रुपया रखकर नदी के घाट तक पहुँचे।

नदी में बाढ़ आई हुई थी। मल्लाह थोड़ी ज्यादा रकम वसूल करने के लिए नदी पार कराने में आना-कानी करने लगा। इस पर वैद्य ने मल्लाह को आधा रुपया अधिक किराया देने का लालच देकर नदी पार करके गाँव पहुँचे।

घर पहुँचते ही दवाइयों की पेटी लेकर जमींदार रामसिंह के घर गए। रामसिंह खाट पर लेटे कराह रहे थे। आचार्य ने जल्दी से कोई दवा उनके मुँह में डाली और संध्या समय तक वे फिर पड़ौसी गाँव में जा पहुँचे।

यह बात सुनकर गाँव वाले वैद्य की तारीफ करते हुए बोले - "वैद्यजी, आज के जमाने में मरीज़ों के प्रति आप जैसी लगन वाले और अपने पेशे के प्रति आदर रखने वाले लोग इने-गिने ही होते हैं।"

वैद्यजी थोड़ी देर उनकी तारीफ़ें सुनते रहे, फिर तपाक से बोले- "लगन और आदर की बातें रहने दीजिये। दरअसल बात यह है कि अगर में जल्दी पहुँचकर दवा न दूँ तो रामसिंह बिना दवा के ही स्वस्थ हो जाते। पहले दो बार ऐसा हो चुका है। अब मैं उन्हें दवा दे आया हूँ तो इलाज का ख़र्च उनसे वसूलने में मुझे कोई तकलीफ़ न होगी।

फेबर कैसल

१७६१ से

छोटा कलाकार

फैब्रिक रंग और त्रिआयामी आउटलाइनर

प्रतियोगिता - ४ (खुद अपने लिए मुखौटे बनाओ)

अपने हाथ से बने मुखौटे से कोई स्वांग रचकर अपनी कल्पनाशीलता दिखाओ

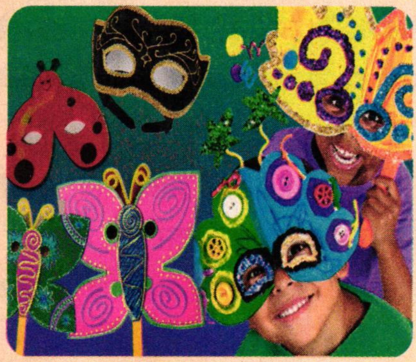

निर्देश:

- एक मोटा सफेद पोस्टर पेपर लो
- कैंची की मदद से फेबर कैसल की डिज़ाइन बनाने वाली विशेष कैंची हो तो बेहतर) अपनी पसंद की डिज़ाइन को मुखौटे की तरह काट लो। फेबर कैसल के मार्कर, या स्केच पेन के साथ उसे अपने चेहरे के सामने लाओ और आँखों, कानों और मुँह के लिए निशान बनाकर काट लो।
- मुखौटे के आधार का फेबर कैसल के अपनी पसंद के फ़ैब्रिक रंगों से रंग दो (क्लासिक, मेटैलिक, फ़्लोरेसेंट और पर्ल शेड)
- फेबर कैसल के त्रिआयामी आउटलाइनर्स (क्लासिक, पर्ल, मेटैलिक और ग्लिटर) से मुखौटे को सजाओ और बाहरी रेखा बनाओ।
- टैग में एक छेद करो और साटन के रिबन या आइसक्रीम के चम्मच से बाँधो साटन का रिबन या आइसक्रीम के चम्मच का फेबर कैसल के त्रिआयामी आउटलाइनर्स से सजाओ

तो अपने दोस्तों से मुखौटे बनवाओ और साथ मिलकर थोड़ा "नकली सा" आनन्द उठाओ!!!

२० सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों के लिए फेबर कैसल के प्रमाण-पत्र

विजेताओं के फोटो पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे

जीतो गिफ़्ट हैम्पर
प्रथम पुरस्कार: रु. १५००
द्वितीय पुरस्कार: रु. ५००
तृतीय पुरस्कार: रु. १५०

१० सांत्वना पुरस्कार प्रत्येक रु १००

सभी ६ प्रतियोगिताओं में भाग लो और एक मेगा पुरस्कार जीतो

कार्टन (फ्रंट पैनल) फेबर कैसल फ़ैब्रिक रंग और त्रिआयामी आउटलाइनर्स ही चिपकाएँ

आपके नजदीकी आउटलेट पर उपलब्ध

Email : info@faber-castell.co.in • website : www.faber-castell.co.in

---

अपना पूरा विवरण भरें। केवल पूरी तरह भरे गए फ़ॉर्म ही प्रतियोगिता में शामिल होंगे।

नाम:........................ कक्षा:............ स्कूल का पता:........................

घर का पता:........................ फ़ोन:............

किन्हीं फेबर कैसल उत्पादों के नाम बताएँ जिनका आप उपयोग करते हों:........................

....

Send your entries to **CHANDAMAMA INDIA LTD.** B-3, LUNIC INDUSTRIES, CROSS ROAD 'B', MIDC ANDHERI (EAST), MUMBAI-400093, TEL : +91 22 28312872 / 28311849, Last Date: 30th April 2010. Judging of winners is at the sole discretion of Faber-Castell. Structure of gift hampers will be decided by **Faber-Castell (I) Pvt. Ltd.** Entries received will be the sole property of Faber-Castell **Paste the cartons (Front Panel) of the Faber-Castell Fabric colours & 3-Dimensional Outliners only. Kindly send your photographs with your entries.**

चिंता का रहस्य!

जगन्नाथ यद्यपि निर्धन था, फिर भी हमेशा प्रसन्न दिखाई देता था। लेकिन कुछ दिनों से वह उदास उदास दिखता था। जगन्नाथ में अचानक यह परिवर्तन देख एक दिन उसके मित्र सोमनाथ ने पूछा, ''क्या बात है मित्र! तुम यूं अचानक कैसे बदल गये?''

जगन्नाथ ने गहरी सांस लेकर कहा, ''सोमनाथ! मैं तुम्हें एक समाचार बताना ही चाहता था, लेकिन भूल गया। आज तक मैं निर्धन था, फिर भी मुझे कोई चिंता न थी और मैं बड़ा खुश था। लेकिन कुछ दिन पहले मेरे मामा का स्वर्गवास हो गया। उनके घर में कोई सन्तान न थी, इसलिये उनकी दो लाख की सम्पत्ति मुझे मिल गई है। फिर दस दिन पहले पड़ोस के गाँव में रहने वाली मेरी बुआ भी चल बसी। उनके पति पहले ही गोलोकवासी हो गये थे। उनके भी कोई सन्तान न होने के कारण वहाँ से भी एक लाख की जायदाद मिली है।''

यह सब सुन कर सोमनाथ ने आश्चर्य से पूछा, ''ये क्या जगन्नाथ? इतनी सारी सम्पत्ति के मिलने पर तुम्हें तो और प्रसन्न होना चाहिये, लेकिन तुम तो उल्टा उदास रहने लगे हो!''

''अब हमारे रिश्तेदारो में कोई निःसन्तान नहीं रह गया,'' लम्बी सांस भरते हुए जगन्नाथ ने कहा।

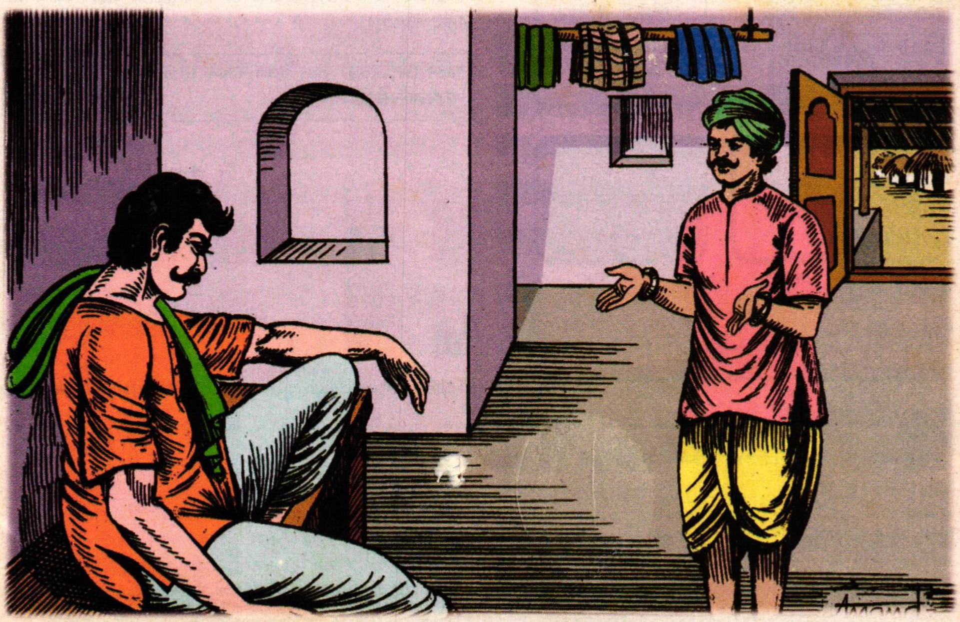

वेताल कथा

दिव्य पुष्प

हठी राजा विक्रमार्क पेड़ के पास गए और लाश को उतारकर अपने कन्धे पर डालकर श्मशान की ओर चल पड़े। शव के भीतर छुपे वेताल ने कहा, "हे राजन्! तुम इस काम को बहुत ध्यानपूर्वक कर रहे हो लेकिन अंत में ऐसी परिस्थितियाँ हो सकती हैं कि तुम्हें खुद ही अपने द्वारा अर्जित चीजें छोड़ देनी पड़ें। मैं तुम्हें भीकर नाम के एक राक्षस की कहानी सुनाता हूँ, थकान से बचने के लिए सुनो।" यूँ कहकर वेताल कहानी सुनाने लगा।

बहुत समय पहले की बात है, दण्डकारण्य जंगल में भीकर नामक एक राक्षस रहता था। उसे केवल एक ही काम आता था, मनुष्यों का शिकार करके उन्हें खाना। यदि मनुष्य न मिलें तो वह अपनी भूख मिटाने के लिए जानवरों का शिकार करता था। सामान्यत:

जंगल से गुजरने वाले राहगीर ही उसका भोजन होते थे। कुछ समय में लोगों को यह पता लग गया कि जंगल में एक राक्षस रहता है और वहाँ से निकालना ख़तरनाक है। लोगों के सावधान हो जाने से भीकर के बारे में न जानने वाला कोई मनुष्य ही यदा-कदा जंगल में जाकर भीकर का भोजन बनता था।

लेकिन इस प्रकार भीकर को अपना पसंदीदा भोजन, मनुष्य, नहीं मिल पा रहा था। अपनी भूख मिटाने के लिए वह हिरणों और जंगली भैसों का शिकार करने को विवश था। इस प्रकार बहुत वर्ष बीत गए। भीकर बूढ़ा हो चला था और उम्र बढ़ने के कारण अच्छे बुरे का ज्ञान होने से वह अपने द्वारा मनुष्यों को मारे जाने का अफसोस करता था। उसके द्वारा मारे गए मनुष्यों की चीखें और विनतियाँ उसके कानों में गूँजती रहती थीं। वे स्मृतियाँ हमेशा उसे परेशान करती थीं और वह दु:खी हो जाया करता था।

अंतत: भीकर इस अपराधबोध से तंग आ गया और उसने अपने पापों का प्रायश्चित करने का निश्चय किया। उसे अपनी पुरानी जीवन शैली से नफ़रत हो गई और वह अपने सभी पापों का प्रायश्चित्त करने को अधीर हो उठा। लेकिन राक्षस होने से उसे ख़ुद को पवित्र करने का कोई उपाय नहीं सूझा।

वह मनुष्यों को मारता रहा लेकिन कभी घने जंगल में तप कर रहे साधुओं के पास भी नहीं फटका था क्योंकि वह उनकी शक्तियों से भयभीत था।

साधुओं की याद आते ही भीकर की व्यग्रता शान्त हो गई। उसने सोचा, ''हाँ, ये सन्त बहुत सी चीजें जानते हैं। हो सकता है वे मुझे कोई ऐसा मन्त्र बता दें जिससे मैं अपने पापों से मुक्त हो जाऊँ।'' यह सोचकर, वह किसी ऐसे साधु की तलाश में निकल पड़ा जो उसकी सहायता कर सके।

कुछ समय बाद उसे एक पेड़ के नीचे गहन साधना में रत एक साधु दिखाई दिया। साधु का नाम चरितार्थ था। भीकर उससे थोड़ी दूर पर बैठकर उसका ध्यान भंग होने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ समय बाद, साधु ने अपनी आँखें

खोलीं। भीकर को देखते ही वह समझ गया कि वह उसके पास क्यों आया है। फिर भी अन्जान बनकर वह बोला, "दैत्य भीकर, तुम यहाँ क्यों आए हो? क्या तुम समझते हो कि तुम मुझे खा सकते हो?" भीकर शर्मिंदा हुआ और बोला, "नहीं हे महान् तपस्वी, मैंने बहुत समय पहले वे पापमय कर्म छोड़ दिए थे। लेकिन अब मैं अपने अतीत की गलतियों के लिए अपराधबोध से ग्रस्त हूँ। कृपया कोई उपाय सुझाएँ। मैं इस दु:ख से कैसे बाहर आ सकता हूँ? यह कहकर वह श्रद्धापूर्वक साधु के समक्ष नतमस्तक हो गया।"

चरितार्थ ने धैर्यपूर्वक भीकर की बात सुनी और फिर मन में सोचा, यह इसे इसके स्थान से हटाकर लोगों के लिए जंगल से गुज़रना सुरक्षित बनाने का बहुत अच्छा मौका है। लेकिन प्रत्यक्ष में वह बोला, "हे भीकर, क्योंकिं तुमने पूछा है, अत: मैं तुम्हें एक अच्छी सलाह देता हूँ। यदि तुम हिमालय तक जा सको, तो वहाँ एक बर्फ़ की झील मिलेगी जिसमें एक दिव्य और सुनहरा पुष्प खिलता है। यदि तुम उस पुष्प को लेकर भगवान शंकर की आराधना करो, तो तुम्हें स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है। लेकिन यह दिव्य पुष्प पच्चीस वर्ष में केवल एक बार खिलता है।"

यह सुनकर भीकर प्रसन्न हो गया। उसने साधु को प्रणाम करके कहा, "हे महान् सन्त, आपने मुझे बहुत अच्छी बात बताई है, लेकिन मुझे एक सन्देह है। मैं हिमालय के बर्फ़ीले निर्जन में इस पुष्प को कैसे ढूँढूँगा?" साधु ने चुटकी ली, "भीकर, हम एक पुष्प की बात कर रहे हैं, और तुम्हें तो पता ही होगा कि हर पुष्प की एक सुगन्ध होती है। बस उस पुष्प की सुगन्ध के माध्यम से उस तक पहुँच जाना। लेकिन तुम्हें हिमालय में वर्षों तक रुकना पड़ सकता है जब तक कि वह दिव्य पुष्प न खिल जाए। वैसे तुम्हारे लिए वहाँ रहना आसान न होगा पर फिर भी अच्छा यही है कि तुम अभी निकल पड़ो।"

साधु की बात सुनकर भीकर बहुत खुश हुआ और हिमालय की ओर चल पड़ा। कुछ समय बाद वह हिमालय पर्वत श्रृंखला तक पहुँच गया। वहाँ वह एक फ़क़ीर का जीवन व्यतीत करने लगा और

इसी प्रकार कई वर्ष व्यतीत कर दिए। एक दिन उसे कहीं से एक बहुत मधुर सुगन्ध आती हुई मालूम हुई। वह उस गन्ध का पीछा करता हुआ आतुरता से दिव्य पुष्प की तलाश में निकला। यहाँ-वहाँ भटकने के बाद उसे पुष्प वाली झील दिखाई दी।

वह तुरन्त ही उस फूल को ले लेना चाहता था परन्तु उसने दो मनुष्यों को झील को ओर जाते देखा।

उनमें से एक ने किसी राजा के सदृश वस्त्र धारण कर रखे थे जबकि दूसरे ने सामान्य प्रकार के वस्त्र पहने थे। राक्षस भीकर को देखते ही राजसी वस्त्र पहने हुए व्यक्ति ने अपनी तलवार निकाली और भीकर पर टूट पड़ने को तैयार हो गया। दूसरा व्यक्ति डर के मारे वहीं जड़वत् हो गया।

उन्हें देखते ही भीकर चिल्लाया, मनुष्यों, मुझसे मत डरो। मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। मैं एक शुद्ध मन का व्यक्ति हूँ और केवल इस दिव्य पुष्प को ले जाकर अपने पापों का प्रायश्चित करने आया हूँ। लेकिन तुम लोग यहाँ क्यों आए हो?

यह सुनकर वे दोनों मनुष्य आश्चर्य में पड़ गए और एक दूसरे का मुँह देखने लगे। पहले राजसी वस्त्र पहले हुए व्यक्ति आगे बढ़ा और बताया कि उसका नाम बुद्धिशेखर है तथा वह विक्रमादित्य के राज्य के प्रधानमन्त्री का पुत्र है। उसने कहा कि विक्रमादित्य किसी अज्ञात बीमारी से ग्रस्त हैं और सभी वैद्यों ने उनकी बीमारी ठीक करने में असमर्थता जता दी है। इस कारण राजकाज रुक गया है और

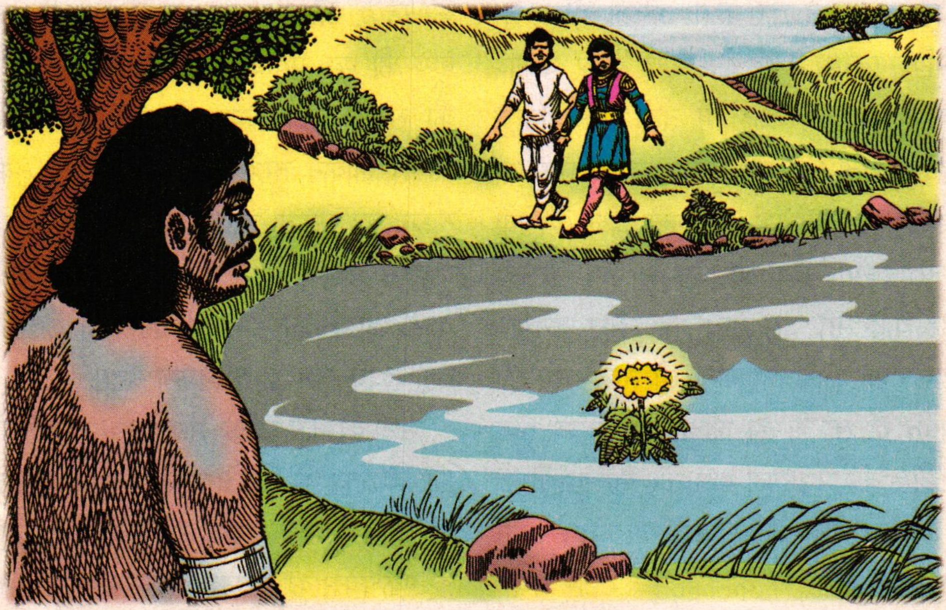

पूरे राज्य में अराजकता फैल गई है। जासूसों ने पता लगाया है कि राज्य की इस स्थिति को देखते हुए पड़ोसी राज्य का राजा उसपर आक्रमण करने की योजना बना रहा है।

अन्तिम उपाय के रूप में चिकित्सकों ने कहा है कि यदि हिमालय में उपलब्ध यह पुष्प लाया जा सके तो वे इससे एक दवा तैयार कर सकेंगे जिससे शायद राजा की बीमारी दूर हो जाए। इसलिए मैं यहाँ आया हूँ, कहकर बुद्धिशेखर ने अपनी बात समाप्त की।

दूसरे व्यक्ति ने हिचकिचाहट के साथ कहा कि उसका नाम माधव है। उसने कहा कि वह अपनी माँ के साथ पास के राज्य गिरपुर में रहता है। वे बहुत गरीब थे और बड़ी मुश्किल से अपना जीवनयापन करते थे। उसे किसी ने बताया था कि यदि वह हिमालय से वह दिव्य पुष्प प्राप्त कर सके तो वह एक धनी आदमी बन जाएगा। अत: उसने अपनी माँ को एक आश्रम में छोड़ा, और मैं पुष्प लेने यहाँ आ गया, माधव ने कहा और शर्मिन्दगी से अपना सिर झुका लिया।

दोनों कहानियाँ सुनने के बाद भीकर ने कहा, देखो मनुष्यों, मैं यहाँ अपने पाप धोने आया था लेकिन हम सभी यहाँ एक साथ आए हैं और यहाँ केवल एक दिव्य पुष्प है। दूसरा पुष्प खिलने में पच्चीस वर्ष लगेंगे। हम क्या करें? पुष्प कौन ले जाएगा? पुष्प ले

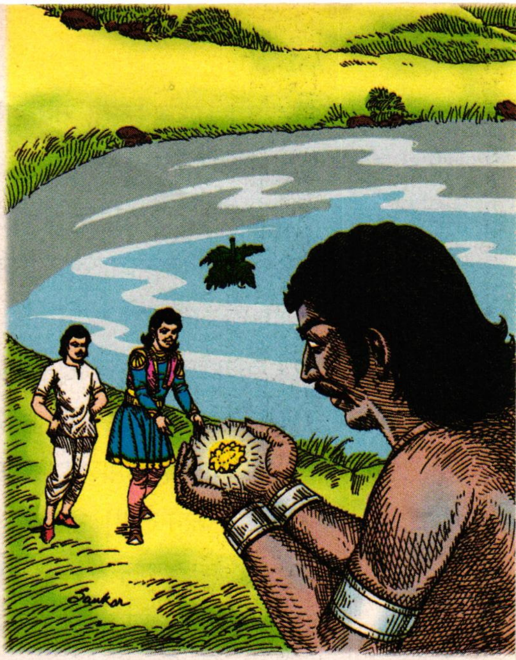

जाने का अधिकार किसको है?

इसके जवाब में प्रधानमन्त्री के बेटे ने कहा, हे राक्षस, तुम यहाँ पहले आए थे और तुमने पुष्प को पहले देखा है। सहज ही, तुम्हारा इसपर पहला अधिकार है। लेकिन यदि मैं इसे ले लूँ, तो मेरे पूरे देश को लाभ होगा।

माधव ने बीच में आह भरी, मुझे यह पुष्प नहीं मिल रहा...यही मेरा सपना था कि...यदि मुझे पुष्प मिल जाता, तो मुझे अपने जीवन में बहुत दौलत मिलती।

भीकर ने यह सब सुना। वह झील के भीतर गया और दिव्य फूल को तोड़कर ले आया। उसने दिव्य पुष्प प्रधान मन्त्री के पुत्र को दे दिया। बुद्धिशेखर ने भीकर के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की और अपने देश जाने के लिए मुड़ा। माधव को देखकर वह

रुका और बोला, अरे माधव, क्या तुम मेरे साथ चलोगे? मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हें अच्छी तनख्वाह के साथ अच्छ नौकरी मिले, और तुम अपनी माँ के साथ सुख से रह सको। माधव खुशी से तैयार हो गया।

भीकर ने सोचा कि दूसरों को दुःख दिए बिना अपना बाकी जीवन बिताना ही उसके पापों का श्रेष्ठ प्रायश्चित होगा। अतः वह हिमालय में एक साधु का जीवन व्यतीत करने लगा।

कहानी खत्म करते हुए वेताल ने विक्रमार्क से पूछा, ''हे राजन्, भीकर वहाँ दिव्य पुष्प को लेकर अपने पापों का प्रायश्चित करने आया था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने स्वयं अपने हाथों से पुष्प तुरन्त ही बुद्धिशेखर को दे दिया। उसने ऐसी मूर्खता क्यों की? क्या यह उसके द्वारा प्रधानमन्त्री के पुत्र को दिया गया सम्मान था? बोलो-बोलो! यदि तुम जानकर भी इसका उत्तर नहीं दोगे, तो तुम्हारा सिर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।

विक्रमार्क ने उत्तर दिया, भीकर अब उम्र के कारण एक समझदार व्यक्ति था और प्रायश्चित करने आया था। उसने सोचा कि मैं यह पुष्प ले लूँ या माधव को दे दूँ, तो इससे केवल एक व्यक्ति को लाभ होगा। माधव जवान था, उसे खुद का और अपनी माँ का पालन-पोषण करने के लिए आदमियों की तरह कमर कसकर जुट जाना चाहिए था। इसकी बजाय वह जादू और मन्त्रों के चमत्कारों के पीछे भाग रहा था। यदि पुष्प प्रधानमन्त्री के पुत्र को मिल जाता तो उसका उपयोग दवा बनाने के लिए होता और उसके कारण राजा विक्रमादित्य ठीक हो जाते और राज्य का ध्यान रख पाते, जिससे हज़ारों का भला होता। इस कारण भीकर ने वह पुष्प प्रधानमन्त्री के पुत्र को दे दिया,'' कहकर विक्रमार्क ने अपनी बात समाप्त की।

इस प्रकार उनका मौन भंग होते ही वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा लटका।

-(कहानी श्री एन. शिव नागेश्वर राव द्वारा रचित)

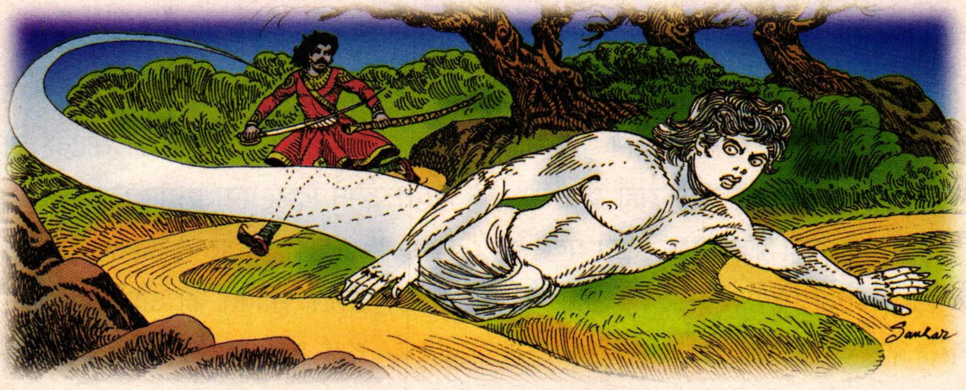

15
आर्य
लालमणि की खोज
पता लगता है कि मरिघा, जो मादा-भेडिया थी, गॉडफादर की बेटी है। उसे पैदा होने पर स्वर्णद्वीप की लालमणि दी गई थी। वह मणि क्लॉ के शरीर में छुपाई गई थी।
यदि मरिघा आपकी बेटी है तो थारविक...
...उसका सगा भाई
मैंने मरिघा और अपनी पत्नी को ढूँढा। अंत में मैंने किसी और महिला को पत्नी बना लिया।
अब वह कहाँ है?
वह बच्चे को जन्म देते वक्त चल बसी और अब प्रभात ही मेरा जीवन है।
मैंने उससे वह सब सिखाया जो मुझे आता था।
पिताजी, क्या आप मेरी काबिलियत की परीक्षा नहीं लेना चाहेंगे?
मेरे बेटे की ऐसी कई बातें थीं जिनके बारे में मुझे पता नहीं था।

उसकी चुनौती से प्रसन्न होकर मैंने उससे लड़ने की हामी भर दी।
वह बहुत जबरदस्त तरीके से लड़ा, लेकिन मेरे पास अनुभव का लाभ था इसलिए जल्द ही मैंने उसे चित कर दिया।
मैं उसे उठाने ही जा रहा था कि अचानक उसका चेहरा बदल गया। एक भयानक आवाज़ गूँज गई।
मेरा बेटा एक अजनबी बन गया जिसने किसी विजेता की निगाह से मेरी आँखों में देखा।
बन्दर ने एक नई कलाबाज़ी सीखी है जो मदारी ने उसे नहीं सिखाई थी।

लेकिन उसने ऐसा करना कहाँ से सीख लिया?
प्रभात सालुंकि से ज्ञान प्राप्त कर रहा था।
सालुंकि... वही? सलगाज़ी का प्रसिद्ध पागल?
हाँ, सालुंकि हर राजा के लिए महत्वपूर्ण था।
उसने कई आश्चर्यचकित कर देने वाले काम किए थे...
...जब तक कि एक रात उसने अपनी किस्मत के लिए दरवाज़ा नहीं खोला।
सालुंकि षड्यन्त्र में फँस गया। हालाँकि वह एक भिखारन थी, पर उसकी आँखों में बहुत गर्व था। उसके कन्धे का कौआ उसे बहुत द्वेशपूर्ण नज़रों से देख रहा था।
कृपया मुझे आज रात के लिए आश्रय दे दीजिए।
फिर क्या हुआ?
सालुंकि ने कौए के अन्दर देखा

उसे लालमणि दिखाई दी हालाँकि उसे तब यह पता नहीं था कि उसकी शक्तियाँ क्या हैं?
जब महिला और भेड़िये का बच्चा सो गए, तो सालुंकि धीरे से कौए को मारने के लिए बढ़ा।
उसके बाद के संघर्ष में उसने गलती से उस महिला को छुरा भौंक दिया।
अपने जुर्म के बारे में जानते ही सालुंकि घबरा गया। उसने कौए और भेड़िये के बच्चे को वहाँ से भगा दिया।
भेड़िये का बच्चा मरिघा थी?
हाँ
(जारी)

उत्तरकाण्ड - २

लक्ष्मण कुछ भी न कह सके। रोते-रोते उन्होंने सीता को साष्टाङ्ग किया। उनके चारों ओर प्रदक्षिणा की। फिर वे नाव पर सवार होकर, उत्तर तट पर पहुँच गए।

रथ पर सवार होकर, उन्होंने रह रहकर, तट के उसके पार, अनाथ की तरह रोती सीता को देखा। सीता भी रथ की ओर देखती रहीं। वह अपने दुःख को काबू में न रख सकीं। फूट फूट कर रोने लगीं। उनके रोने से सारा निर्जन वन गूँज उठा।

उस निर्जन वन में अकेली रोती सीता को मुनि कुमारियों ने देखा। वे वाल्मीकी के पास भागी-भागी गईं। "स्वामी! गंगा के तट पर एक स्त्री न मालूम क्यों रो रही है। वे ऐसी मालूम होती हैं, जैसे आकाश से उतरी हुई कोई अप्सरा हों। लगता है, उनका कोई नहीं है। उनको आश्रय मिलना चाहिए। आप तुरंत जाकर उनको देखिये।"

वाल्मीकी महामुनि अपने शिष्यों के साथ, सीता के पास गये। उन्हें पहिचान कर, उन्होंने कहा, "दशरथ की वधू का स्वागत है! तुम यहाँ कैसे पहुँचीं, यह मैंने अपनी शक्ति द्वारा जान लिया है। तीनों लोकों का वृत्तान्त मुझे मालूम होता रहता है। जब तक मैं हूँ, तब तक तुम्हें कोई भय नहीं है। मेरा आश्रम पास ही है। वहाँ तपस्विनियाँ हैं। वे तुम्हारी

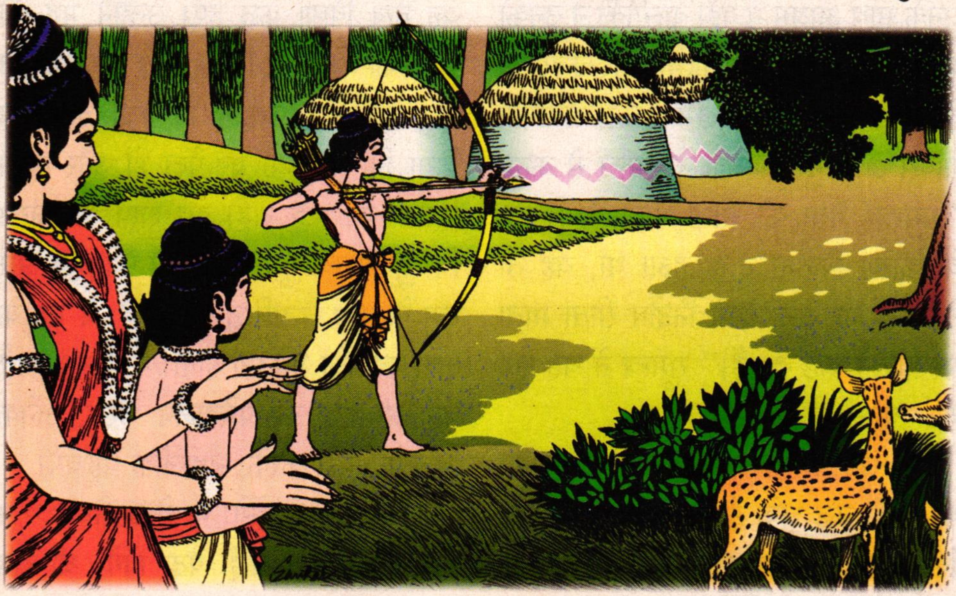

देखभाल करेंगी। चिन्ता मत करो। यह अर्ध्य लो। तुम आश्रम में वैसे ही रह सकती हो, जैसे अपने घर में रहती थीं।

सीता ने उनको नमस्कार किया और उनके साथ आश्रम में गईं। वाल्मीकी ने उनको मुनि पत्नियों को सौंप दिया और कहा कि वे उनकी अच्छी तरह देखभाल करें। अयोध्या वापस आते हुए लक्ष्मण ने सुमन्त्र से कहा, ''सुमन्त्र! भैया को सीता माता के वियोग के कारण कितना दुःख हुआ था, यह तो देखा ही था, अब देखो निर्दोष सीता माता पर कितने कष्ट हुए हैं।'' सुमन्त्र ने यह सुन कर कहा- ''हे लक्ष्मण!

श्री राम के भाग्य में सुख कम है। मुनि पहिले ही कह चुके हैं कि उन्हें स्वजनों का वियोग सहना होगा। यह बड़ा भारी भेद है। मैं आपको बताता हूँ। पर आप इसे भरत-शत्रुघ्न से न कहें।'' यूँ कहकर सुमन्त्र ने सुनाना शुरु किया।

एक बार जब महाराज दशरथ, वशिष्ठजी के आश्रम में गए, तो वहाँ अत्रि महामुनि के पुत्र दुर्वासा भी थे। मुनियों का स्वागत प्राप्त करके, महाराज ने बातों बातों में ऋषि दुर्वासा से पूछा- ''महात्मा! मेरी सन्तान का भविष्य कैसा होगा? राम की उम्र कितनी है? मेरे बाकी लड़के कितने साल जीयेंगे? हमारे राम के कितने लड़के होंगे? वे कितने साल जीवित रहेंगे?'' इन प्रश्नों के उत्तर में दुर्वासा ने एक पुरानी कहानी सुनाई।

देवताओं और राक्षसों के युद्ध में राक्षस हारकर भृग महामुनि की पत्नी के आश्रम में आये। उन्होंने राक्षसों को अभयदान दिया। यह देख विष्णु क्रुद्ध हुए। उन्होंने भृग की पत्नी का सिर काट दिया। तुरंत भृग महामुनि क्रुद्ध हुए और उन्होंने विष्णुजी को श्राप दिया कि वे पृथ्वी पर पैदा हों और पत्नी वियोग का कष्ट सहें। इस शाप के कारण विष्णु, आपके पुत्र के रूप में पैदा हुए और राम के नाम से प्रसिद्ध हुए। राम को भृग के शाप का फल भुगतना होगा। वे ग्यारह हजार वर्ष अयोध्या का परिपालन करके, अनेक अश्वमेघ यज्ञ करके, ब्रह्मलोक पहुँचेंगे।

उनके दो पुत्र होंगे। पर वे अयोध्या में न पैदा होकर और कहीं पैदा होंगे। श्री राम

उनका राज्याभिषेक करेंगे ऐसा दुर्वासा ने महाराज दशरथ को बताया।

ये बातें करते करते लक्ष्मण और सुमन्त्र शाम के समय गोमति के किनारे पहुँचे। उन्होंने रात वहीं काटी। अगले दिन जब वे अयोध्या की ओर जा रहे थे, तो लक्ष्मण सोचने लगे कि राम को कैसे और क्या कहा जाये।

रथ अयोध्या पहुँचा। लक्ष्मण, राम के महल में अन्दर गए। सिंहासन पर बैठकर आँसू बहाते हुए राम को नमस्कार करके कहा- ''आपकी आज्ञा के अनुसार, माता सीता को गंगा तट पर, महामुनि वाल्मीकी के आश्रम में छोड़ आया हूँ। शोक न करें। वृद्धि से क्षय, उन्नति से पतन, संयोग से वियोग अवश्यम्भावी है। जो बदनामी आयी है, वह स्वयं चली जायेगी।''

''लक्ष्मण, तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया। मुझे बहुत सन्तोष है और कोई दुःख नहीं है'' राम ने कहा।

तब तक उन्होंने चार दिन पहले से प्रजा की बात न सुनी थी। यह बड़ी गलती थी। राम ने लक्ष्मण को यह बात कहकर, उसके दृष्टान्त रूप में नृग महाराज की कथा कही।

किसी समय में नृग महाराजा ने करोड़ों गौएँ ब्राह्मणों को दान में दीं। दान में दी हुई गायों में से एक गलती से राजा की गायों में मिल गई। यह बात राजा को मालूम न हुई। उसने वह गौ, एक और ब्राह्मण को दान में दे दी। उस ब्राह्मण ने गाय को खोजना आरम्द किया और खोजते-खोजते उस गाय को किसी और ब्राह्मण के घर कनखल में देखा। उसने गाय को अपने दिये हुए नाम से

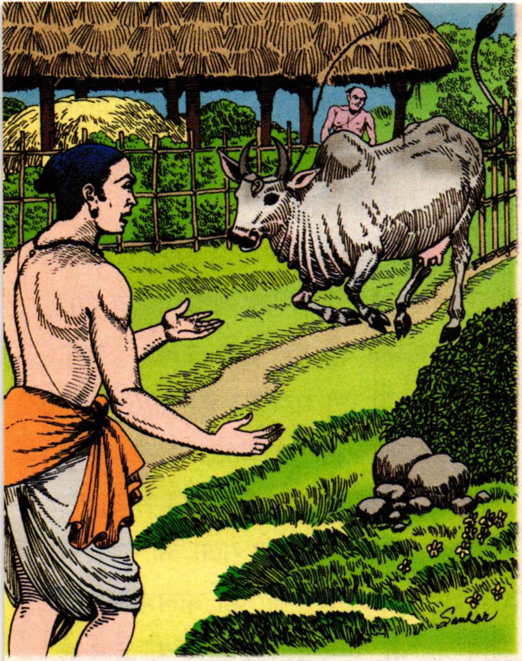

पुकारा। गौ भी अपने पुराने मालिक की आवाज़ पहचान गई। रस्सी तोड़कर रम्भाती, उसके पीछे चल दी। यह देख दूसरे ब्राह्मण ने कहा- "मेरी गौ को तुम क्यों ले जा रहे हो? इसे नृग महाराजा ने मुझे दान दिया है।"

"नृग महाराजा ने ही मुझे भी दान दिया है।" पहले ब्राह्मण ने कहा। क्योंकि वे स्वयं इसका फैसला नहीं कर सकते थे इसलिए वे सीधे नृग महाराज के पास गये। परन्तु वे राजा के दर्शन न कर सके। बाहर द्वार पर उनको कई दिन प्रतीक्षा करनी पड़ी। आखिर उन्होंने क्रोध में श्राप दिया कि राजा गिरगिट हो जाये, और बिना किसी की नज़र पड़े गड्ढ में जीये। जब राजा ने उनको मनाने की कोशिश की, तो उन्होंने कहा कि चक्र वंश में वासुदेव पैदा होगा जो उनको शाप मुक्त करेगा।

इसके बाद, नृग महराजा ने अपने वसु नाम के लड़के का राज्याभिषेक वैभव के साथ किया। फिर, गिरगिट का जीवन सुख से बिताने के लिये राजा ने कुछ गड्ढे खुदवाये। उन पर छाया के लिए वृक्ष लगाए गए। आसपास फूलों के पौधे भी लगाए गए।

नृग महाराजा की कहानी सुना कर राम ने लक्ष्मण को निमि की भी कहानी सुनाई।

निमि महाराज इक्ष्वाकू के पुत्रों में बारहवें थे। उन्होंने एक दिव्य नगर बनाया और उसका नाम वैजयन्त रखा। उन्होंने अपने पिता को खुश करने के लिये एक यज्ञ करने की सोची और मुनि वशिष्ठ से उसका पौरोहित्य करने के लिए कहा। परन्तु वशिष्ठ यह कह कर चले गये कि इन्द्र ने पहले ही उनसे एक यज्ञ करवाने के लिए कह रखा था और उस यज्ञ के बाद ही वे उनका यज्ञ करवा सकेंगे। इसलिए निमि ने गौतम मुनि से यज्ञ करवाया। इन्द्र का यज्ञ पूरा करके जब वशिष्ठ वापिस आए, तो उनको यह जानकर क्रोध आया कि उनकी अनुपस्थिति में निमि ने वह यज्ञ करवा दिया था । वे राजा से मिलने गए। उस समय राजा सो रहा था।

वशिष्ठ ने राजा के दर्शन के लिये कुछ देर प्रतीक्षा की। फिर यह सोच कर कि राजा जान बूझकर उससे प्रतीक्षा करवा रहा था, उन्होंने उसे शाप दिया - "राजन्, क्योंकि तुमने किसी और से यज्ञ करवाकर मेरा

अपमान किया है, इसलिये तुम्हारा शरीर निश्चेतन हो जाए।

जब राजा उठे, तो उन्हें मुनि वशिष्ठ के शाप के बारे में मालूम हुआ। "जब मैं सो रहा था, तब तुमने यह शाप दिया है, इसलिये तुम्हारा शरीर भी निश्चेतन हो जाये," उसने भी वशिष्ठ को शाप दिया।

इस प्रकार एक दूसरे को शाप देकर निमि और वशिष्ठ विदेह हो गये। तब वशिष्ठ वायु रूप में अपने पिता ब्रह्मा के पास गये। "पिताजी, निमि के शाप से मेरा शरीर चला गया है। देह के न होने के कारण बड़े कष्ट हो रहे हैं। इसलिये कृपा करके मुझे एक शरीर दिलवाइये," उन्होंने कहा।

ब्रह्मा ने वशिष्ठ से, मित्र और वरुण के तेज से फिर शरीर प्राप्त करने के लिये कहा। इस प्रकार दुबारा शरीर प्राप्त किये हुए वशिष्ठ ईक्ष्वाकु वंश के पुरोहित बने।

और निमि के शरीर की मुनियों ने रक्षा की। यद्यपि निमि की सारी देह चली गई थी, पर उसके सारे प्राण उसकी आँखों में थे। फिर जब उन्होंने निमि की देह को मथा, तो एक लड़का पैदा हुआ, जो मिथि कहलाया। उनके नाम से ही मिथिला नगर बसा। उनका नाम जनक भी है।

कहानियाँ सुनकर लक्ष्मण ने कहा - "क्षत्रिय होकर भी निमि ने वशिष्ठ जैसे महात्मा के प्रति सहिष्णुता क्यों नहीं

दिखाई?"

"रोष में, हर किसी के लिये शान्ति खो बैठना आसान है। इस तरह के रोष का नियन्त्रण करने वाले, केवल ययाति ही हैं।" - कहकर, राम ने लक्ष्मण को ययाति की बात यूँ सुनाई।

ययाति नहुष के पुत्र थे। उनकी दो पत्नियाँ थीं। एक थी महाराजा वृषपर्व की राजकुमारी शर्मिष्ठा और दूसरी शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी। जो प्रेम ययाति को शर्मिष्ठा पर था, वह देवयानी पर न था। जितना प्रेम शर्मिष्ठा के बेटे पूरु पर था, उतना देवयानी के पुत्र यदु पर न था।

सच कहा जाय तो पूरु बड़ा गुणवान था और ऊपर से शर्मिष्ठा का लड़का भी था। यदु को यह गवारा न था कि उसके पिता पूरु

को अधिक प्रेम करें। उसने अपनी माँ देवयानी से कहा - ''माँ, तुम महान् शुक्राचार्य की पुत्री हो और मैं तुम्हारा पुत्र हूँ फिर हम दोनों ही इतना अपमान क्यों सह रहे हैं? चलो हम दोनो अग्नि में प्राण त्याग दें। मैं यह अपमान नहीं सह सकता। मैं आत्महत्या कर लूँगा।'' - कहकर वह जोर से रोने लगा।

पुत्र का दुःख देखकर देवयानी को गुस्सा आया। उसने अपने पिता को याद किया। तुरन्त शुक्राचार्य वहाँ आये। ''मेरे पति मुझको बड़ी नीची नज़र से देखते हैं। यह अपमान सहना मेरे लिये बड़ा कठिन है। मैं आत्महत्या कर लेना चाहती हूँ'' - देवयानी बोली।

शुक्राचार्य को बड़ा गुस्सा आया। उन्होंने शाप दिया कि ययाति वृद्ध हो जायें, पुत्री को आश्वासन दिया, फिर घर वापिस चले गए। शुक्राचार्य के शाप को यायाति ने जैसे तैसे स्वीकार किया। उन्होंने यदु को बुला कर कहा - ''बेटा, मैं अभी भोगों से नहीं ऊबा हूँ। इसलिये मेरे वार्धक्य को, तुम कुछ दिन ले सकोगे? जब मैं भोगों से तृप्त हो जाऊँगा, तब मैं तुम्हारा यौवन तुम्हें वापिस कर दूँगा और अपना वार्धक्य ले लूँगा।''

''जब आपके साथ भोजन करने योग्य पूर है, तो मैं क्यों आपका वार्धक्य लूँ? उसे ही लेने के लिए कहिये!'' यदु ने कहा।

तब ययाति ने पूर को बुलाकर, उससे भी वही कहा, जो यदु से कहा था। पूर, अपने पिता का वार्धक्य स्वीकार करने के लिए मान गया। ययाति ने अपना वार्धक्य पूर को देकर उसका यौवन लेकर हज़ारों यज्ञ किये और हज़ारों वर्ष राज्य किया। अंत में ययाति ने पूर से वार्धक्य वापस ले लिया, उसका राज्याभिषेक किया और देवयानि के बेटे यदु को राज्य के लिए अयोग्य घोषित कर दिया। बाद पूर ने प्रतिष्ठान को राजधानी बनाकर राज्य किया।

राम-लक्ष्मण ने यूँ कथाएँ सुनते-सुनाते रात बितायी। पूर्व में ऊषा की लाली दिखाई देने लगी।

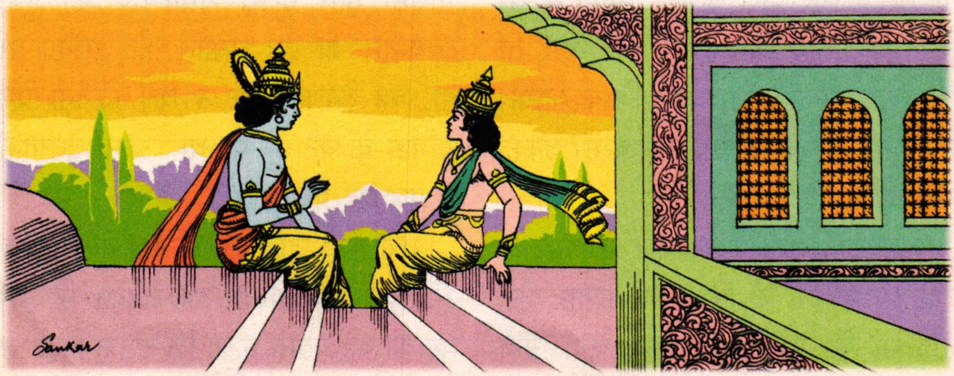

मित्र-भेद - ५

दमनक के द्वारा दंतिल की कहानी सुन कर संजीवक बोला- "तुम्हारा कहना ठीक है, इसलिए तुम जैसा चाहते हो, करो।" इसके बाद दमनक संजीवक को पिंगलक के पास ले गया और बोला- "महाराज, यही संजीवक है! अब आप की जैसी इच्छा?"

संजीवक पिंगलक को प्रणाम करके बड़ी नम्रता के साथ सामने बैठ गया। पिंगलक ने अपने तेज़ व भयंकर नखोंवाला पंजा फैलाकर कहा- "तुम्हारा स्वागत है! बताओ, तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? तुम इस जंगल में क्यों आये हो?"

संजीवक ने बताया कि वह वर्धमान के दल के साथ कैसे आया और जंगल में वह कैसे अकेले ही रह गया। इसके बाद क्या क्या हुआ, सारी बातें बतायीं।

इस पर पिंगलक ने अभय प्रदान करते हुए कहा- "दोस्त, तुम्हें किसी प्रकार के भय की ज़रूरत नहीं। तुम अपनी इच्छा के अनुसार इस जंगल में स्वेच्छापूर्वक जिओ। मगर सदा तुम मेरी दृष्टि में ही रहो। क्योंकि जब मैं तुम्हारा ख़्याल न रख सकूँगा, तब ऐसे अनेक खूँख्वार जानवर इस जंगल में हैं जो तुम्हरी हानि कर सकेंगे!"

"जो आज्ञा!" यह कह कर संजीवक सीधे यमुना नदी में गया, भरपेट पानी पीकर पहले की भांति निर्भयता के साथ जंगल में विचरण करने लगा।

दिन बीतते गये और साथ ही पिंगलक और संजीवक के बीच मित्रता बढती ही गयी। पिंगलक हर बात में संजीवक की सलाह लेता, संजीवक बडा ही अक्लमंद था। वह

करटक, दमनक इत्यादि की गुप्त चर्चाओं का पता लगा लेता और पिंगलक को सचेत किया करता था। इसलिये पिंगलक उन जानवरों को दूर रखता और संजीवक की ही सलाहों को ही स्वीकार कर लेता था । दोनों सियारों को दरबार में प्रवेश न मिला था, इस कारण वे भूख से तडपने लगे थे। एक दिन दमनक ने करटक से कहा- ''भैया हम तो निराश्रय हो गये हैं। पिंगलक को संजीवक के साथ वार्तालाप करने में सा मज़ा आने लगा है कि वह शिकार खेलने तक नहीं जाता। इस कारण हमें खाना तक नहीं मिल रहा है । अब हमें क्या करना है?''

''तुम जा कर पिंगलक को समझा दो। राजा भले ही न सुने मंत्रियों को तो सचेत करना ही है।''

''यह तुम्हारी ही बेवकूफ़ी थी कि तुमने घास चरने वाले जानवर का राजा के साथ परिचय कराया । अब क्या हो सकता है'' करटक ने ताने कसे।

''तुम सच कहते हो ! गलती मेरी है, राजा की नहीं । यह तो मेरा स्वयंकृत अपराध है। स्वयंकृत अपराध कभी कभी कैसे हानि कराते हैं, देवशर्मा की कहानी बताती है।'' दमनक ने कहा।

''क्या कहा? सो कैसे?'' करटक ने पूछा। इस पर दमनक ने यों कहा :

देवशर्मा की कहानी

एक प्रदेश में जनपदों से दूर एक मठ था। देवशर्मा नामक यति उस मठ में अकेला रहता और शिवलिंग की अर्चना किया करता था। अनेक भक्त उस मठ को क़ीमती वस्त्र दान दिया करते थे। अपने सर्वस्व को त्यागने के बाद भी यति देवशर्मा के मन में सोने के प्रति लोभ था। एक दिन वह अपना वेष बदलकर क़ीमती वस्त्रों का गट्ठर बांधकर दूर के एक नगर में ले गया । उन वस्त्रों को सोने के बदले बेच दिया। वह सोना कपडे की एक थैली में बांधकर थैली को अपने कन्धे पर लटकाकर मठ को लौट आया ।

इसके बाद वह किसी पर विश्वास नहीं करता था। दिन रात उस थैली को कँधे पर

लटकाये रहता था। यह बात लोगों ने अनुभवपूर्वक ही बतायी थी- ''सम्पत्ति को साधना कठिन है, उसकी रक्षा करना भी कठिन है, उसे खोना दुख का कारण है। उसका व्यय होना भी दुख का हेतु है। उसका मूल ही दुख है। उसका परिणाम विषाद्पूर्ण है।''

आषाढ़भूति नामक एक दुष्ट था । वह पाप करने से डरता न था । दूसरों की सम्पत्ति को लूटना ही उसका लक्ष्य था । देवशर्मा के कँधे पर लटकनेवाला सोना एक दिन उसकी नज़र में आया। वह हमेशा यही सोचने लगा कि कैसे वह सोना हड़प ले। मठ की दीवारें पत्थरों से बनायी गयी थीं, इसलिये सेंध लगाना मुश्किल था। इसलिये आषाढ़भूति ने सोचा कि देवशर्मा का शिष्य बन कर उसे मीठी-मीठी बातें सुनाकर उसका विश्वास्पात्र बने।

यह सोचकर एक दिन आषाढ़भूति देवशर्मा के पास गया। ''परमशिव को प्रणाम! कहते उसके चरणों पर साष्टांग गिर पड़ा। उसने बड़ी विनय के साथ कहा- ''महात्मा! भवसागर सूखी घास की ज्वाला जैसा क्षण भंगुर है। सुख सब निर्जल मेघों के समान हैं। बंधु, पत्नि-पुत्र इत्यादि स्वप्न की भ्रांति जैसे हैं। ये सारी बातें पूर्णरूप से जान लेने के बाद मैं आपकी सेवा में मोक्ष पाने का

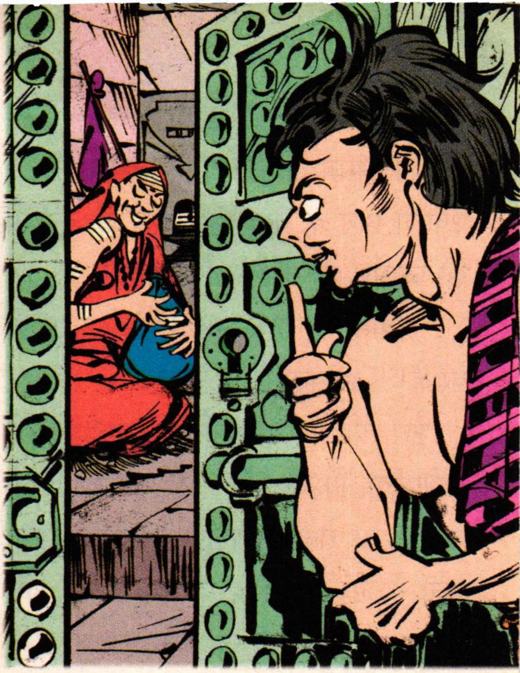

मार्ग जानने आया हूँ।''

ये बातें सुनकर देवशर्मा ने कहा- ''बेटा, इतनी छोटी अवस्था में लौकिक झंझटों को तोड़ने वाले तुम धन्य हो! यौवन में साधनेवाला आत्म निग्रह ही सच्चा निग्रह है। तुमने मुझसे मोक्ष का मार्ग पूछा। जो व्यक्ति निष्ठा के साथ ॐ नमः शिवाय कहते शिवजी पर एक पुष्प रखेगा, उसे पुनर्जन्म का भय न होगा।

इस पर आषाढ़भूति ने झट देवशर्मा के चरण पकड़ लिये और कहा- ''महात्मा, यह पुनश्चरण करना है, समझाकर मुझे धन्य कीजिये।''

''समझाऊँगा, बेटा! पर तुम्हें रात्रि के समय मठ में प्रवेश करना मना है। यति को

सांसारिक बंधनों से दूर रहना है। इसके लिये रात्रि के समय अकेला रहना आवश्यक है । उपदेश पाने के बाद तुम बाहर की कुटी में सो जाओ। देवशर्मा ने समझाया।

''स्वामी! आपकी आज्ञा मेरे सिर आँखों पर है!'' आषाढ़भूति ने कहा।

उस रात्रि को देवशर्मा ने आषाढ़भूति को मंत्रोपदेश किया और उसे अपना शिष्य बनाया। वह रोज़ अपने गुरू के चरण दबाता, पूजा के लिये फूल व पत्तियाँ लाता, और इस तरह गुरू को प्रसन्न रखने लगा।

दिन बीतते गये। आषाढ़भूति सोचने लगा- ''क्या मेरा गुरू कभी मुझ पर पूर्ण विश्वास न करेगा? ऐसे तो इसका सोना हाथ आता नहीं दिखता। क्या करुँ? क्या दिन दहाड़े क्या इसकी हत्या करनी होगी? या ज़हर खिलाकर मारना होगा?

उन्हीं दिनों में एक घटना हुई। देवशर्मा का एक भक्त मठ में आया और दूसरे दिन अपने घर होने वाले यज्ञोपवीत धारण के समय उपस्थित रहने का निमंत्रण दिया।

दूसरे दिन देवशर्मा आषाढ़भूति को साथ ले अपने भक्त के गाँव की ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर रास्ते में एक नदी पड़ी। देवशर्मा ने अपने वस्त्र उतारे, कन्धे पर लटकनेवाली थैली निकाल कर वस्त्रों के बीच लपेट दिया। स्नान करने के पहले कालकृत्य करने के विचार से बोला- ''आषाढ़भूति! मैं अभी आता हूँ। तब तक तुम ये वस्त्र खासकर इस थैली का ख्याल रखना। यह परमशिव की सम्पत्ति है।'' यों कहकर देवशर्मा चला गया। वह आषाढ़भूति की आँखों की विचित्र चमक नहीं देख पाया था।

देवशर्मा के आँखों से ओझल होने तक आषाढ़भूति वहीं रहा, तब सोनेवाली थैली को उठाकर भाग खड़ा हुआ, और फिर कभी नज़र नहीं आया।

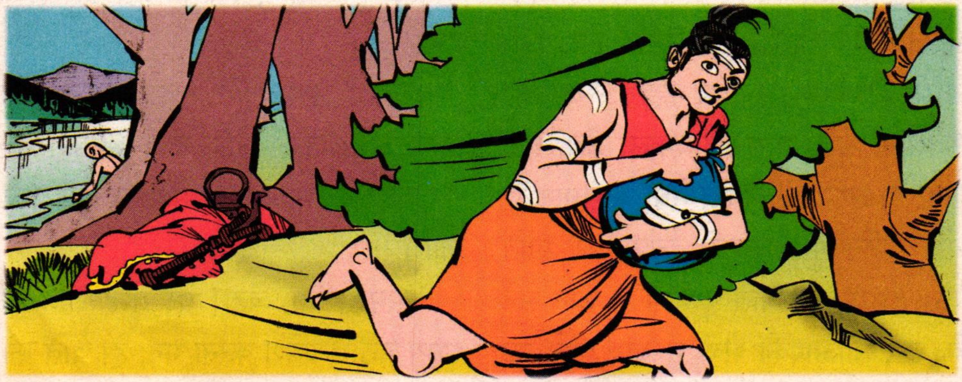

अनन्सी और भृङ्गी कीट

भगवान ओयानकोपन बहुत खुश थे। उनके पास रतालू का दुनिया का सबसे बड़ा खेत था। सभी जगहों से लोग रतालुओं की बेहतरीन फसल को देखने आते थे।

कटाई का समय निकट आ रहा था। ओयानकोपन ने दुनिया में सभी के लिए एक घोषणा की। उस खबर को सभी ने प्रसन्न होकर सुना और हर रोज़ इन्सान और जानवर उस महान अवसर के बारे में बात करते और उस दिन का इन्तज़ार करते जब वे उन रतालुओं को देख पाएँगे।

लेकिन, एक प्राणी ऐसा भी था जो इस कटाई से खुश नहीं था। यह था एक मकड़ा - अनन्सी! अनन्सी खेत की मेढ़ पर बैठा गुमसुम सा खेत की ओर ताक रहा था।

''काश कि रतालू मुझे मिल जाते! मैं और मेरा परिवार इन स्वादिष्ट रतालुओं पर अपना पूरा जीवन काट लेते!'' अनन्सी ने सोचा।

अचानक उसने एक निर्णय किया। ''हाँ, मैं रतालू चुरा लूँगा! कटाई में अब भी पूरा एक महीना बचा है!''

हर शाम जब वहाँ कोई देखने वाला न हो, अनन्सी थोड़े रतालू उखाड़कर अपने घर ले जाने लगा। जैसे-जैसे अनन्सी के घर के भीतर भंडार भरने लगा, खेत की दुर्दशा होने लगी। लेकिन ओयानकोपन को अपने अनमोल खेत में हो रही इस घटना का पता नहीं था। अनन्सी हर दिन आराम से और अधिक रतालू उखाड़ रहा था।

एक दिन ओयानकोपन ने कटाई से पहले जाकर अपना खेत देखने की सोची। देखकर उन्हें बहुत बड़ा झटका लगा! किसी ने सैकड़ों रतालू उखाड़कर उनके आधे खेत को आधा तबाह कर दिया था!

ओयानकोपन बेहद नाराज़ हुए। उन्होंने सभी प्राणियों और मनुष्यों को बुलाया और सफ़ाई माँगी। लेकिन किसी को इस बारे में कुछ पता नहीं था और सभी यह सुनकर उतने ही हैरान और नाराज़ हुए कि किसी ने रतालू चुरा लिए हैं।

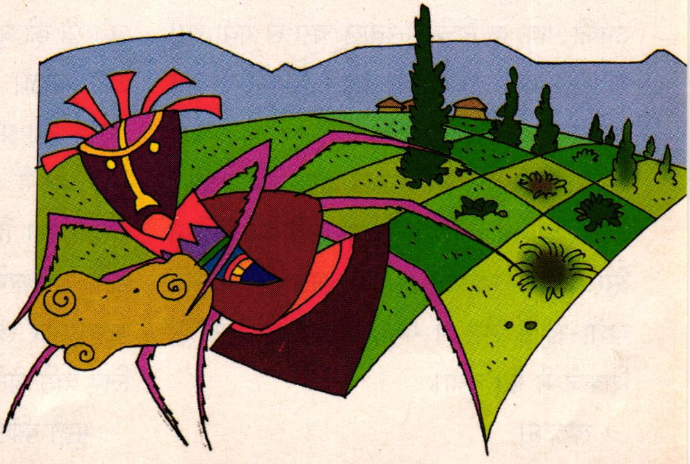

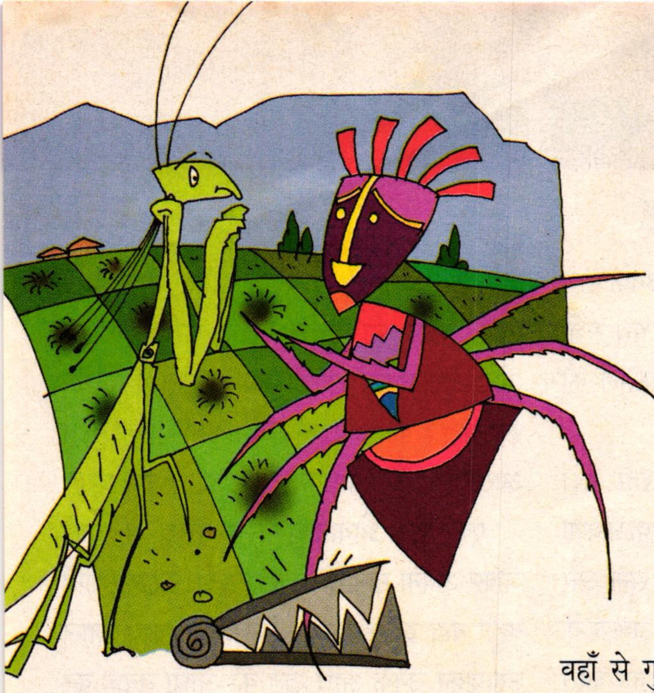

अनन्सी पकड़ा गया। वह अपनी आठों आँखों पर भरोसा नहीं कर पा रहा था! यदि लोगों ने उसे शिकंजे में फँसा देख लिया, तो उसे बचने का कोई मौका नहीं मिलेगा! वह रात बहुत दुःख की थी, और जैसे-जैसे सूरज उदित हुआ, अनन्सी भय से काँपने लगा। सवेरा हो गया था और जल्दी ही सब लोग आ जाएँगे।

उसी समय, उसने एक भृङ्गी कीट को खुशी-खुशी सीटी बजाते हुए वहाँ से गुजरते देखा। अनन्सी ने अपनी आँखें मलीं और खुश होते हुए हवा में हाथ हिलाया।

"अरे भृङ्गी! जल्दी आओ! मैं सदियों से रास्ता देख रहा हूँ," अनन्सी बड़बड़ाया।

"क्या? मेरा रास्ता देख रहे हो?" भृङ्गी कीट कुछ समझ नहीं पा रहा था।

"तुम मेरा स्थान लेने आए हो ना?" अनन्सी ने पूछा। भृङ्गी कीट कुछ न समझने का भाव लिए अनन्सी को घूरता रहा। "तुम क्या कह रहे हो?" उसने पूछा। अनन्सी ने अपना सिर हिलाया, "तुम्हें नहीं पता कि यहाँ क्या हो रहा है? यहाँ कोई चोर है जो भगवान ओयानकोपन के रतालू चुराता रहा है! ज़रा सोचो, किसकी इच्छा हुई होगी यह करने की!" अनन्सी ने गुस्सा दिखाकर कहा। और सभी प्राणी खेत पर निगाह रखने के लिए बारी-बारी पहरा दे रहे हैं।

भृङ्गी कीट शर्मिन्दगी से मुस्कुराया, "मुझे तो

ओयानकोपन ने सभी को अपने आँख-कान खुले रखने का आदेश दिया। "किसी भी कीमत पर चोर को पकड़ो!" उन्होंने गुस्से से कहा।

उस शाम जानवर और मनुष्यों ने खेत के आस-पास पहरा दिया। लेकिन बूढ़ा अनन्सी इतनी आसानी से पकड़ में आने वाला नहीं था।

अगली सुबह उन्हें पता लगा कि कोई एकदम उनकी नाक के नीचे से रतालू चुरा ले गया था। यह कुछ दिनों तक चलता रहा और चोर हर बार उन्हें चकमा देता रहा।

"क्यों न हम खेत में सब जगह शिकंजे लगा दें?" हाथी ने सुझाया। इसपर सभी जानवरों ने सिर हिलाकर सहमति दी। उस रात, जब अनन्सी खुशी-खुशी खेत में गया, तो उसका एक पैर शिकंजे में फँस गया।

खटाक!

इस बारे में कुछ भी पता नहीं है!''

अनन्सी ने अपने मुक्त पैर से भृङ्गी की पीठ थपथपाई और बोला, ''यह बिल्कुल सही है। चलो अब इस खेत की रखवाली के लिए अपना योगदान दो।

भगवान ओयानकोपन को तुम पर गर्व होगा।'' भृङ्गी कीट ने अपना सिर हिलाया। ''तुम्हें केवल यह करना है कि इस उपकरण से मेरा पैर निकाल कर अपना पैर इसमें डालो,'' अनन्सी ने सपाट स्वर में कहा।

भृङ्गी कीट को थोड़ा शक हुआ, ''लेकिन यह तो शिकंजे जैसा लगता है!''

अनन्सी नाराज़ होता हुआ बोला, ''तुम्हें मुझ पर यकीन नहीं? ठीक है। मैं अपनी जगह पर पहरा देने के लिए किसी और को ढूँढ लूँगा। वैसे भी भगवान ओयानकोपन यहाँ आने ही वाले हैं, और आने पर वे पहरे पर बैठे पहरेदार की प्रशंसा भी करेंगे ही।''

भृङ्गी कीट ने सोचा कि यदि भगवान ओयानकोपन मेरी प्रशंसा करें और मेरी पीठ ठोकें, तो कितना अच्छा होगा!

''मुझे खेद है कि मैंने तुमपर शक किया,'' कहकर उसने अनन्सी के पैर को निकालने में मदद की और सावधानी से अपना पैर शिकंजे में डाल दिया।

अनन्सी जितनी जल्दी हो सका, वहाँ से भाग निकला।

जब भगवान ओयानकोपन और सभी प्राणी खेत पर आए, तो भृङ्गी कीट को समझ में आया कि कोई बड़ी गड़बड़ हो गई है। वह थर-थर काँपने लगा।

उन सभी के हाथों में डंडे थे। डरते-डरते उसने पूरी कहानी सुनाई। भगवान ओयानकोपन को उसकी बात का यकीन हो गया। ''तो चालाक अनन्सी इस सीधे-सादे प्राणी को फँसाकर भाग निकला है!'' वे गुस्से से बोले। ओयानकोपन ने सभी प्राणियों को भृङ्गी कीट को छुड़ाने और अनन्सी को खोजने का आदेश दिया। लेकिन भृङ्गी कीट इस पूरे वाकये से इतना डर गया कि कई दिनों तक उसका पूरा शरीर काँपता रहा। आज भी तुम देख सकते हो कि वह पूरा का पूरा काँपता रहता है। वह बेचारा अब तक उस झटके से उबर नहीं पाया है!

- रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित

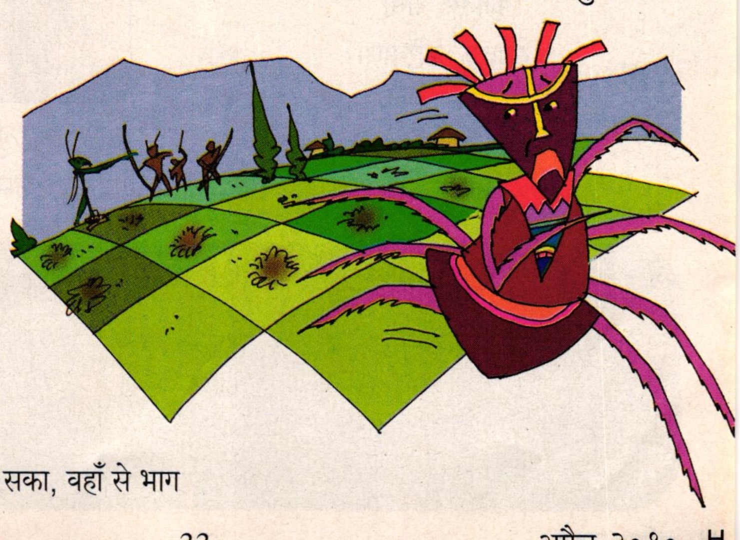

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो दोनों चित्रों को एक दूसरे से जोड़ता हो?

KALANIKETAN BALU

KALANIKETAN BALU

प्रविष्टि हमारे पास इस माह की २० तारीख तक इस पते पर पहुँच जाना चाहिए।

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC,
Andheri (East), Mumbai-400093.

सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रु का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसकी घोषणा अगले अंक के बाद के अंक में की जाएगी।

बधाइयाँ

कार्तिक शर्मा,
रोहतक, हरियाणा

विजयी प्रविष्टि

बुढ़ापे की सवारी!
उम्मीदें और तैयारी!!

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१३ फरवरी २००९ उत्तर:

१. २१ फरवरी, २. कोंकणी, ३. असमिया, ४. हिन्दी ५. हिन्दी, उर्दू और बंगाली, ६. पंजाबी, ७. संस्कृत

नोटः कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

तेज़ फार्मूला

इस माह की समस्या:

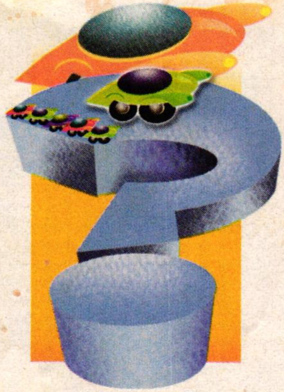

अ, ब, स, द, और इ एक कार रेस में भाग ले रहे हैं। अ ८० किमी/घं की गति से कार चला रहा है, ब ९६ किमी/घं की गति से, स ५० मील/घं की गति से, द ६५ मी/घं की गति से और इ ६० मी/घं की गति से गाड़ी चला रहा है। अ की गति और सबसे तेज़ प्रतियोगी की गति में कितना अन्तर है? (सभी परिवर्तनों को निकटतम पूर्णांक में बदल दो) इसे स्वयं करने का सबसे तेज़ तरीका क्या है?

नोट: इसका जवाब जून १० के अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

सबसे तेज़ फ़ॉर्मूला जीतेगा ५००रु. का पुरस्कार! यदि एक से अधिक सही जवाब हुए, तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को १००रु. का पुरस्कार मिलेगा। अपनी प्रविष्टियाँ ३० अप्रैल २०१० से पहले इस पते पर भेजें:

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
या उन्हें ई-मेल कर:contests@chandamama.com पर

फरवरी १० का सही जवाब ये रहा:

चरण १: अनपढ़ों की कुल संख्या की गणना करो।

गाँवों में अनपढ़ों की संख्या: १-४= ६०० X ४ = २४००

गाँवों में अनपढ़ों की संख्या ५-९ = ८०० X ५ = ४०००

गाँव १० में अनपढ़ों की संख्या = ३७१

गाँव ११-१३ में अनपढ़ों की संख्या = २०० X ३ = ६००

कुल = ७३७१

चरण २: प्रत्येक गाँव में अनपढ़ों की औसत संख्या= ७३७१/१३

मुश्किल लगता है? नीचे दिये गए चरणों से यह पता करो कि क्या ७३७१ का १३ से भाग दिया जा सकता है?

१. संख्या के अंतिम अंक को अलग करो, उसे ४ से गुणा करो (जो १३ का ऑपरेटर है) और फिर परिणाम को बाकी की संख्या में जोड़ दो, यानि

७३७+(१X४) = ७३७+४ = ७४१

२. यही प्रक्रिया परिणाम के लिए दोहराएँ, यानि

७४+ (१X४) = ७४+४ = ७८.

३. इस परिणाम के लिए भी यही प्रक्रिया दोहराएँ यानि

७+ (८X४) = ७+३२= ३९

हम जानते हैं कि ३९, का १३ से भाग दिया जा सकता है।

अत: ७३७१ का १३ से भाग दिया जा सकता है।

७३७१/१३= ५६७ (लाँग डिविज़न से)

(पेज ६८ पर जारी)

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - १५

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by Infosys FOUNDATION, Bangalore

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को २५० रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

***यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।**

आपको क्या करना है

१. एक कागज पर उत्तर लिखें।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखें।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१५** लिखो।

४. आपके उत्तर ३० अप्रैल तक हमें मिल जाना चाहिये।

५. सही उत्तर जून २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

भारतीय संगीत का सब-कुछ!

१. संगीत का प्राचीन, संस्कृत नाम क्या था?

२. दो प्रकार का भारतीय शास्त्रीय संगीत कौन सा है?

३. कौन सा भारतीय शास्त्रीय नृत्य ओधर मगध नामक क्षेत्र में जन्मा?

४. १५वीं शताब्दी के कौन-से संगीतज्ञ को आदिगुरू या कर्नाटक संगीत के जन्मदाता यानि कर्नाटक संगीत पितामह कहा जाता है?

५. *सूफियाना कलाम* एक प्रकार का भक्ति संगीत है जो एक भारतीय राज्य विशेष में बहुत गाया जाता है। उस राज्य का नाम बताओ।

६. जाकिर हुसैन कौन-सा वाद्य बजाते हैं?

७. भारतीय तार-वाद्य कौन-सा है?

चन्दामामा को अपनायें!

अपने न्यूज़पेपर वाले से आपको नियमित रूप से चन्दामामा देने का अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रमुख बुक शॉप्स से भी ले सकते हैं। चन्दा के लिए www.chandamama.com पर लॉग करें।

यह सरल और विस्मयकारी पानी का पम्प बनाएँ!

आपको क्या चाहिये:

- ३० सेमी लम्बा पीवीसी पाइप या पपीते का तना
- पानी से भरी बाल्टी

कैसे करें:

- बाल्टी को पानी से भरें। पाइप/तने को अपने बाएँ हाथ में पकड़ें और उसे पानी में ऊपर-नीचे हिलाएँ।
- अपने दाएँ हाथ की हथेली को पाइप/तने का ऊपरी सिरे पर हल्का सा टिकाएँ और ऊपर और नीचे हिलाते समय उसे धीरे से क्रमश: बन्द करें और खोलें।
- जल्द ही आपको पानी बाहर उछलता हुआ दिखाई देगा।

सिद्धान्त:

यहाँ बाएँ हाथ का ऊपर-नीचे चलना पम्पिंग करता है जबकि दायीं हथेली वॉल्व का काम करती है।

जब पाइप नीचे जाता है, तब हथेली खुली रहती है, जिससे वायु को बाहर निकलने का रास्ता मिलता है, और जब पाइप को ऊपर उठाया जाता है, तो हथेली बन्द रहती है। अत: पाइप का पानी नीचे नहीं जा पाता।

(यह पृष्ठ, पूना के इंटर-यूनिवर्सिटी सेन्टर फ़ॉर एस्ट्रॉनॉमी एण्ड एस्ट्रोफ़िज़िक्स में अतिथि वैज्ञानिक, श्री अरविन्द गुप्ता ने लिखा है।)

शास्त्रज्ञान-लोक ज्ञान

रामापुर में रंगनाथ नामक एक वैद्य रहा करता था। आयुर्वेद में वह दक्ष था। उसके पास जो रोगी आते थे, उनकी चाल-ढाल के आधार पर, वो कुछ कहें, इसके पहले ही वह बता देता था कि उनके किस उम्र में, कैसे-कैसे रोगों से पीड़ित होने की संभावना था। उनकी पीड़ा और उसका मूल कारण क्या है, जैसी बातें सुनकर ररोगी आश्चर्य में डूब जाते थे। इस वजह से सब लोग निर्विवाद रुप से यह मानते थे कि वह अवश्य ही योग्य वैद्य है, फिर भी रोगी अधिक संख्या में चिकित्सा के लिए उसके पास नहीं आते थे।

सुदूर प्रांत में रह रह चिरकाचार्य नामक गुरु एक बार रंगनाथ से मिलने आए। उस समय एक महिला रंगनाथ के पास आयी और कहने लगी, ''महाशय, मैं बीस साल की हूँ। इतनी छोटी-सी उम्र में ही मैं एक अनजान रोग से पीड़ित हूँ। कृपया बताइये कि यह रोग क्या है और इससे मैं कैसे छुटकारा पा सकती हूँ।'' वह कुछ और बताने ही जा रही थी कि रंगनाथ ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''क्या कहा तुमने? तुम बीस साल की हो? नहीं, नहीं। तुम्हारी उम्र कम से कम उनतीस होगी।'' यह सुनते ही वह महिला नाराज़ हो उठी और फ़ौरन वहाँ से चलती बनी।

रंगनाथ ने गुरु चरकाचार्य की ओर देखते हुए कहा, ''गुरुवर, मेरी समझ में नहीं आता कि हमेशा ऐसा क्यों होता है। मेरे पास आनेवाले बहुत अधिक रोगी मेरी बातों से एकबार रि नाराज़ होकिर बीच में ही चले जाते हैं।''

इसपर चरकाचार्य ने मुस्कुराते हुए कहा, ''अभी-अभी मैंने देख भी लिया कि ऐसा क्यों होता है। तुममें चिकित्साशास्त्र-ज्ञान भरा पड़ा है, पर लौकिक ज्ञान का अभाव है। आनेवाले मरीज़ों से सच कहना, पर आगे से इसका ध्यान रखना कि उनके दलों को ठेस न लगे। इसके लिए लौकिक ज्ञान चाहिए।

-त्रिविक्रम

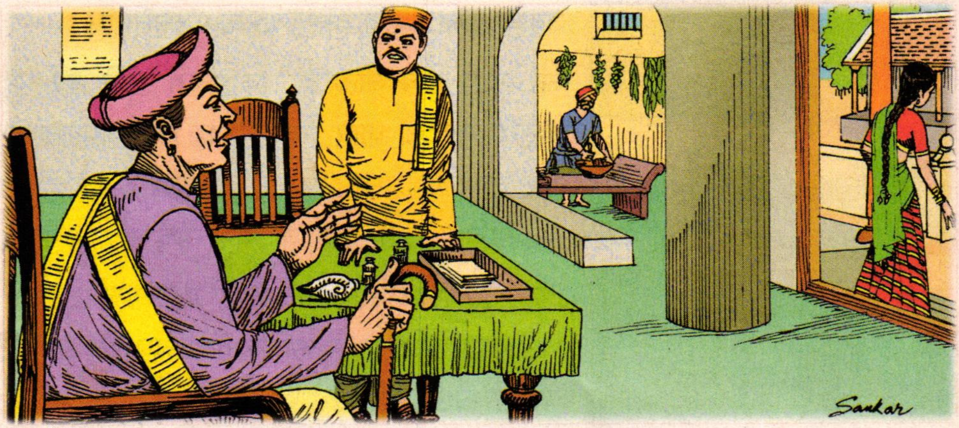

स्वर्ग - नरक

एक मुनि एक शिथिलालय के सामने ध्यान-मग्न होकर बैठे हुए थे। तभी वहाँ से एक सैनिक योद्धा अपने घोड़े से उतरा और मुनि के सामने खड़ा हो गया। थोड़ी देर के बाद जब मुनि की आँखें खुलीं, तो योद्धा ने उन्हें प्रणाम किया और बोला, ''बहुत दिनों से मेरे मन में एक सन्देह है।''

''कहो'' मुस्कुराते हुए मुनि बोले।

''स्वर्ग-नर्क को लेकर दुनिया में लोग बहुत बातें करते हैं, क्या वे बातें सचमुच सही हैं?''

''तुम कौन हो? क्या करते हो?'' मुनि ने धीमे स्वर में पूछा।

''मैं इस देश का सेनाधिपति हूँ,'' गर्व भरे स्वर में योद्धा बोला।

''तुम जैसे मूर्ख को किसने सेनाधिपति बना दिया? मुनि ने पूछा।

मुनि की बात पर योद्धा को क्रोध आ गया और उसने झट अपनी तलवार निकाल ली।

''अभी-अभी तुममें नर्क का द्वार खुल रहा है,'' कहकर मुनि मुस्कुराए। मुनि की बात सुनकर योद्धा को झटका सा लगा। वह दो कदम पीछे हटा और तलवार को म्यान में रखते हुए बोला, ''क्षमा कीजिएगा मुनिवर।''

''अभी-अभी तुममें स्वर्ग का द्वार खुल रहा है। काम, क्रोध, लाभ, मोह आदि दुर्गुण ही नर्क के द्वार हैं। हममें सुख-संतोष भरते हैं, शांति, करुणा, दया, सहनशक्ति आदि सद्गुण। जिस हृदय में ये सद्गुण रहते हैं, वह हृदय ही स्वर्ग का द्वार है। स्वर्ग और नर्क कहीं और नहीं हमारे ही हृदय में हैं।'' मुनि बोले।

''समझ गया मुनिवर। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'' कहते हुए योद्धा ने मुनि को एक और बार प्रणाम किया और वहाँ से चल पड़ा। उसके चेहरे से ही पता लग रहा था कि उसे अब कोई शंका नहीं थी।

(जापानी कहानी के आधार पर)

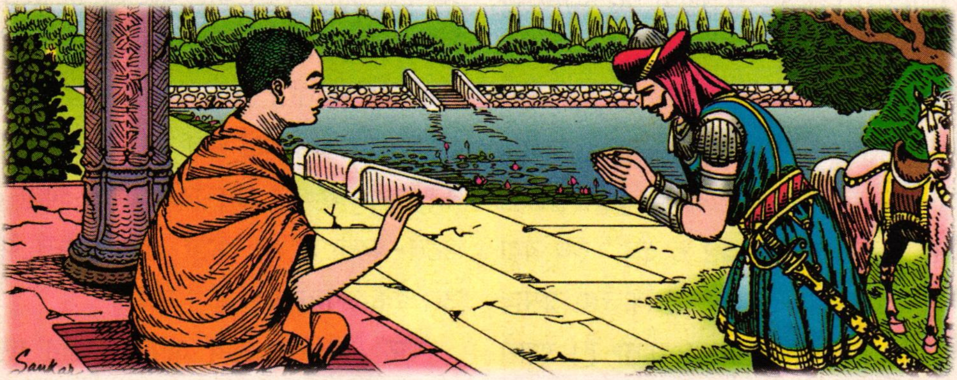

सेर को सवा सेर

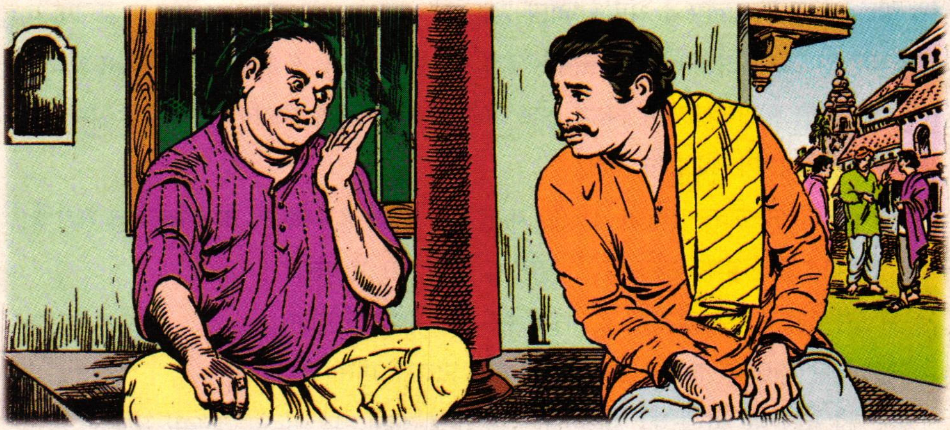

गोविन्दपुर में रग्घू साव नाम का एक बनिया रहता था। वह गल्ले की दुकानदारी के साथ-साथ सूद पर पैसे भी देता और हेराफेरी से लोगों से बहुत पैसे ऐंठता था। जब उसे यह विश्वास हो जाता कि वह किसी से दो के दस ऐंठ सकता है, तभी वह उसे कर्ज़ देता। अन्यथा कोई लाख सिर पटके, उसे फूटी कौड़ी तक उधार न देता।

राम प्रसाद उसी के गाँव का एक गरीब किसान था। गरीबी के कारण वह बराबर ही किसी न किसी से कर्ज़ लेता रहता। रग्घू साव के पास जा कर उसने कहा, ''रग्घू भाई, बड़ी मुसीबत में पड़ गया हूँ। ब्याज चाहे जितना ले लो, लेकिन हफ्ते भर के लिए पच्चीस रुपये उधार दे दो।'' रग्घू बड़ा काइयाँ था। वह जानता था कि राम प्रसाद की हालत बराबर खस्ता रहती है। इससे ब्याज तो दूर रहा, मूल भी मिलना मुश्किल था। लेकिन रग्घू उसे नाराज़ भी नहीं करना चाहता था। इसलिये उसने रामप्रसाद से कहा, ''तुम तो आज पहली बार उधार माँग रहे हो, लेकिन किस्मत देखो; तुम्हारी क़सम! आज मेरा हाथ बिल्कुल खाली है, नहीं तो तुम्हें खाली हाथ न लौटाता।''

राम प्रसाद को इस बात का बड़ा दुःख हुआ कि रग्घू ने उस पर पच्चीस रुपये का भी विश्वास नहीं किया। धीरे-धीरे उसका दुःख क्रोध में बदल गया और उसने निश्चय किया कि किसी भी तरह उससे रुपया वसूल करके रहेगा। उसे कैसे मूर्ख बना कर रुपया वसूल करे, इसी पर वह रात-दिन चलते-फिरते, उठते-बैठते विचार करने लगा। अन्त में उसे एक उपाय सूझ ही गया।

एक दिन रग्घू साव अपनी दुकान पर

अकेला बैठा हुआ था। तभी रामप्रसाद दौड़ा हुआ उसके पास आया। उसने रग्घू साव के बहुत क़रीब जाकर पूछा, ''रग्घू भाई, जरा बताना कि पाँच दस कितने होते हैं?''

रग्घू ने सोचा कि वह अंकों का गुणा-भाग नहीं कर सकता इसीलिये पूछ रहा है। इसलिये उसने कहा, ''पचास।''

''तुम्हरी अक्ल घास चरने गई है क्या? पचास नहीं साठ होगा।'' रामप्रसाद ने थोड़ी ऊँची आवाज़ में कहा।

''तुम भी निपट मूर्ख हो। साठ नहीं पचास होगा।'' रग्घू ने भी चिल्लाते हुए कहा। पचास, साठ, पचास, साठ कह कर दोनों इस प्रकार चिल्लाने लगे मानों दोनों झगड़ रहे हों। दोनों को झगड़ता समझ कर वहाँ पर कुछ लोग एकत्र हो गये।

''भीड़ को सम्बोधित करते हुए रामप्रसाद ने ज़ोर-जोर से चीखते हुए कहा, ''भाइयों मेरा न्याय कर दीजिए। यह शरीफ़ बना हुआ रग्घू साव मेरे दस रुपये हड़पना चाहता है। मैंने इसके पास साठ रुपये जमा किये थे लेकिन यह पचास ही बता रहा है। आप लोग न्याय करके मेरे पूरे रुपये वापस दिलवाइये।''

रामप्रसाद का यह बदला हुआ रूप देख कर रग्घू साव हक्का-बक्का रह गया मानों काटो तो खून नहीं। वह आँखें दिखाते हुए बोला, ''अरे कैसा दुष्ट और बेईमान है यह रामप्रसाद! भला कब तुमने मेरे पास पैसे जमा कराये?'' फिर उसने लोगों से कहा, ''भाइयों यह सरासर झूठ बोल रहा है। इसने कभी भी मेरे पास

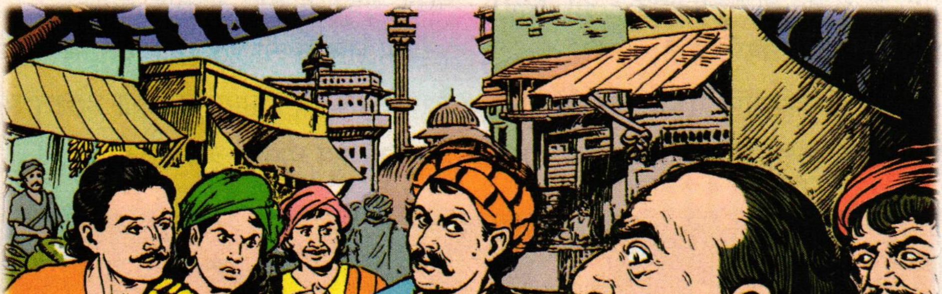

रुपये जमा नहीं कराये।''

तभी रामप्रसाद ने उसकी बात को काटते हुए कहा, ''अपना नाटक बन्द करो रग्घू सावजी! कौन नहीं जानता कि तुम इसी प्रकार लोगों के पैसे हड़प कर मालदार बने हो। अभी तो पचास बता रहे थे और अब वह भी गटकनारायण कर गये। कम से कम पचास तो दे दो। तुमने मुझे अच्छा सबक़ सिखाया है। अब मैं भूल से भी तुम्हारे पास पैसे जमा नहीं कराऊँगा।''

रामप्रसाद ने यह सब इस प्रकार कहा जैसे उसने सचमुच पैसे जमा कराये हों। सब को उसकी बातों पर विश्वास हो गया।

इसलिये वहाँ एकत्र हुए सभी लोगों ने रग्घू साव को डाँटते हुए कहा, ''पहले तो तुम पचास देने को तैयार थे। फिर हम लोगों के सामने ही तुमने इनकार कर दिया। यह तो सरासर बेईमानी है।

अब तो रामप्रसाद पचास पर भी राजी है। चुपचाप पचास रुपये वापस कर दो।'' कुछ देर और विवाद चलता रहा तो साठ रुपये भी देने पड़ेंगे यह सोच कर रग्घू साव घबरा गया और झट पचास रुपये निकाल कर रामप्रसाद के हाथ में रख दिये।

हाथ में रुपये आते ही रामप्रसाद ठठा कर हँस पड़ा और भीड़ के सामने ही उसे पच्चीस रुपये वापस करते हुए कहा, ''यह चाल मैंने तुम्हें सबक़ सिखाने के लिये चली थी। यह लो पच्चीस रुपये वापस और शेष पच्चीस रुपये कर्ज़ के रूप में रख रहा हूँ। मुझे पैसों की सख्त जरूरत थी लेकिन फिर भी तुमने मुझे टाल दिया। पैसे रख कर जरूरतमन्द लोगों की मदद नहीं की तो ऐसे पैसे का लाभ ही क्या है। मैं चाहूँ तो ये सारे पैसे रख सकता हूँ लेकिन मैं गरीब जरूर हूँ मगर बेईमान नहीं।''

रग्घू साव ने लज्जित हो अपना सिर नीचे कर लिया। लोग रामप्रसाद की हरकत पर मुस्कुराते हुए वापस चले गये।

मालिक और नौकर

चैतन्य श्रृंगेरीगिरि ग्राम का एक सुखी सम्पन्न व्यक्ति था। हाल ही में उसका धूम-धाम से विवाह हुआ था। उसकी पत्नी चित्रा भी एक धनी परिवार की बेटी थी। चैतन्य अपनी पत्नी को उसके जन्मदिन पर दस हज़ार रुपयों का एक हार उपहार में देना चाहता था। इसलिए वह एक दिन पूर्व हार खरीदने के लिए शहर चला गया।

शहर से लौटते समय शाम को देर हो गई। चैतन्य अन्धेरा होने से पहले ही गाँव लौट आना चाहता था। इसलिए उसने जयराम को घोड़ा तेज़ हाँकने को कहा। जयराम उसका गाड़ीवान था।

जयराम ने सिर हिलाकर घोड़े को चाबुक लगाया और तेज़ चलने के लिए ललकारा। गाड़ी तेज़ रफ़्तार से चल पड़ी। लेकिन अभी गाड़ी बहुत दूर भी नहीं गई थी कि अचानक रुक गई। ''गाड़ी क्यों रोक दी?'' चैतन्य ने जयराम को डाँटते हुए पूछा।

जयराम ने सड़क के किनारे खड़े एक आदमी की ओर इशारा करते हुए कहा- ''मालिक! यह आदमी मेरी पत्नी का चचेरा भाई काशीराम है। यह भी हमारे ही गाँव जा रहा है। इसके नाना नाज़ुक हालत में हैं। गाँव जल्दी पहुँच जाने पर कम से कम यह उनको अन्तिम बार देख तो सकेगा। आप की आज्ञा हो तो इसे भी साथ बिठा लें?''

वैसे तो चैतन्य किसी को भी अपनी गाड़ी में बैठाना पसन्द नहीं करता। फिर भी वह खीजता हुआ बोला- ''तो इसका मतलब यह है कि यह गाड़ी पर सवार होना चाहता है। अच्छी बात है। उस से कह दो कि गाड़ी में आ जाए।'' जयराम का रिश्तेदार काशीराम चैतन्य को प्रणाम करके गाड़ी में आ बैठा।

गाड़ी फिर से चल पड़ी। जयराम जब-तब ज़ोर से चिल्लाकर घोड़े को ललकार रहा था। रास्ता ऊबड़-खाबड़ था। एक जगह जब गाड़ी मुड़ रही थी, तब

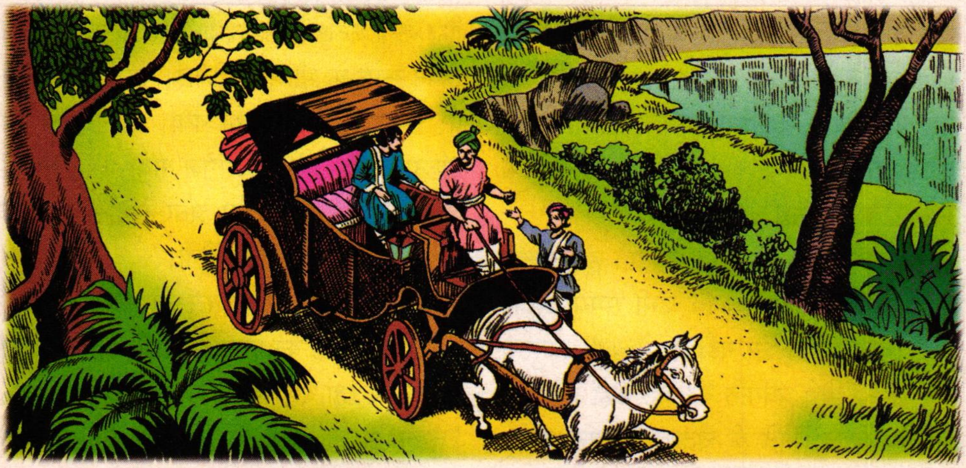

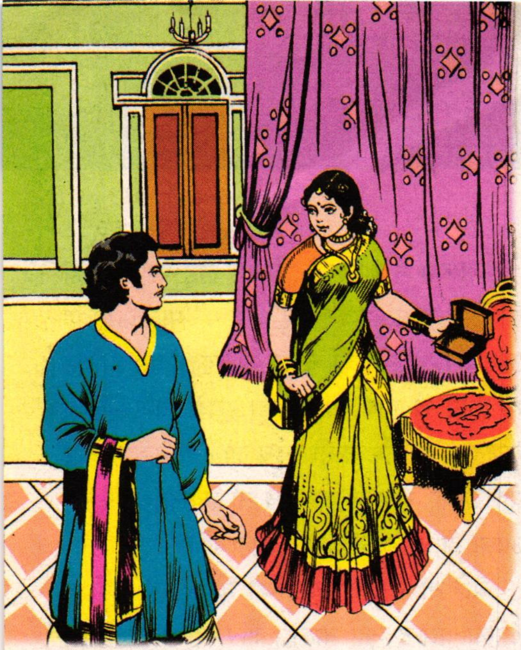

उसका एक पहिया एक गड्ढे में धँस गया। इस पर जयराम झट नीचे कूद पड़ा। चैतन्य और काशीराम लुढ़क कर नीचे गिर गए। चैतन्य की फल की टोकरियाँ और अन्य सामान भी नीचे बिखर गए।

काशीराम पहले उठ खड़ा हुआ। तब जयराम और काशीराम ने मिलकर चैतन्य को उठाया। चैतन्य के दाएँ पैर में थोड़ी मोच आ गई। इसके बाद, जयराम और काशीराम ने सारी ताकत लगाकर गाड़ी के पहिये को गड्ढे से बाहर निकाला। तब काशीराम ने नीचे गिरे हुए सामान को उठाकर गाड़ी में करीने से रख दिया। इसके बाद गाड़ी फिर चल पड़ी। गाँव में पहुँचते ही काशीराम गाड़ी से उतरकर चला गया।

चैतन्य गाड़ी से उतरकर लंगड़ाते हुए दालान की ओर जा ही रहा थश कि उसी समय उसकी पत्नी चित्रा सामने आ गई। उसने बड़ी आतुरता से पूछा - ''मेरी वर्षगाँठ की भेंट कहाँ है?''

यह सवाल सुनते ही चैतन्य का मन कचोट उठा। उसकी पत्नी ने उसके लंगड़ाते पैर और चोट की चिंता किए बिना अपनी भेंट की सबसे पहले परवाह की।

''रास्ते में गाड़ी एक गड्ढे में धँस गई थी। हम भारी खतरे से बाल-बाल बच गए।'' चैतन्य ने फिर भी नाराज़ हुए बिना अपना हाल बताया।

''यह बात मैं फिर आराम से सुन लूँगी। पहले बताइये, मेरी भेंट किधर है?'' यों कह कर चित्रा ने अपने पति के हाथ से झट थैली ले ली और उसके अन्दर रखी मन्जूषा निकाली।

चित्रा ने मंजूषा का ढक्कन खोलते हुए कहा- ''मेरी एक सहेली आज सुबह हमारे गाँव में आ गई है। आप कोई मामलूी उपहार तो नहीं लाए हैं?'' यों कहकर उसने मन्जूषा खोलकर देखी और फिर विस्मित और अवाक् हो पति की ओर ताकती रह गई।

पत्नी के आश्चर्य का कारण न समझकर चैतन्य ने भी मन्जूषा पर दृष्टि डाली। उसमें हार नहीं था।

चित्रा ने चैतन्य की ओर क्रोध भरी निगाह से देखा और कहा- ''क्या यही मेरे जन्मदिन का उपहार है? क्या आप मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं?'' फिर उस मन्जूषा को जमीन पर पटक कर वह अपने कमरे के भीतर चली गई। पत्नी की मूर्खता पर चैतन्य को गुस्सा आ गया। उसने पत्नी को डांटना चाहा, पर वह संभल गया और सोचने लगा- ''पहले चोरी का पता लगाना है, यह काशीराम की ही करतूत होगी।''

यो सोचकर वह अस्तबल की ओर गया। वहाँ पर जयराम घोड़े को दाना खिलाकर घर जाने की तैयारी कर रहा था। चैतन्य ने उसे रोककर डाँटा- ''तुमने अपनी पत्नी का रिश्तेदार बताकर एक

चोर को गाड़ी पर बैठा लिया। जब सामान गाड़ी से नीचे गिरा, तब उसने मेरा दस हज़ार मूल्य का हार चुरा लिया और खाली पेटी को मेरी थैली में रख दिया। तुम इसी वक्त जाकर उससे हार ले आओ, वरना बहुत बुरा होगा। खाली हाथ मेरे घर मत लौटना।''

दस हज़ार रुपये के हार के खो जाने की खबर सुनते ही जयराम को लगा, मानो उसके सिर पर गाज़ गिर गई हो। उसकी समझ में नहीं आया कि वह मालिक को क्या जवाब दे। उसने चुपचाप सिर झुका लिया। जब चैतन्य वहाँ से चला गया तब वह दौड़कर अपनी झोंपड़ी में पहुँचा।

जयराम की पत्नी अपनी झोंपड़ी के सामने पति का इन्तज़ार कर रही थी। जयराम ने उसके पास जाकर दाँत पीसते हुए कहा- ''तुम्हारे रिश्तेदार नामी डाकू हैं। तुम्हारे भाई काशीराम ने हमारे मालिक की थैली में से दस हज़ार रुपये का हार चुरा लिया है। उसने कहा था कि तुम्हारे नाना बीमार हैं। इसलिए हमने उसे गाड़ी में जगह दी। तुम अभी जाकर उसके यहाँ से वह हार ले आओ।''

जयराम की पत्नी ने जब यह सुना कि उसके नाना मौत की घड़ियाँ गिन रहे हैं, तब वह ये बात भूल गई कि काशीराम ने उसके मालिक का हार चुरा लिया है।

'नाना बीमार पड़ गए? मुझे किसी ने ख़बर तक नहीं दी'' कहकर वह अपने नाना के घर की ओर दौड़ पड़ी।

चैतन्य अस्तबल से लंगड़ाते हुए अपने मकान के फाटक के पास ज्यों की पहुँचा, उसने देखा कि उसकी पत्नी की उम्र की एक औरत ड्योढ़ी से उतरकर गली में जा रही है। चैतन्य रुक कर

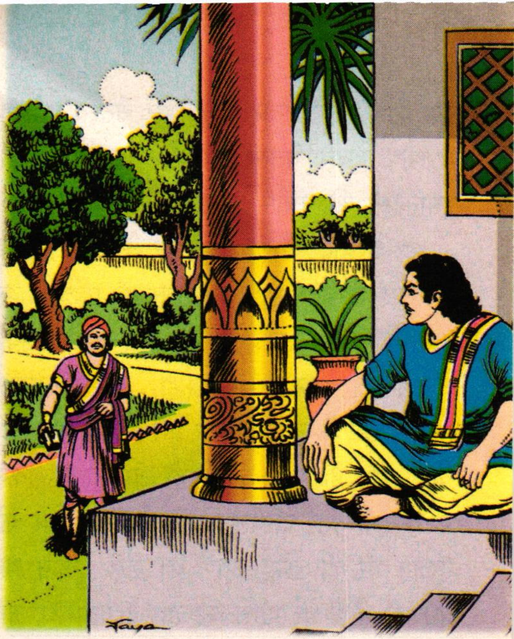

देखने लगा कि यह औरत कौन हो सकती है। इतने में चित्रा उसका हाथ पकड़कर बोली- ''आपके पैर का दर्द कैसा है? मेरी सहेली इसलिए आई थी कि आप मेरे वास्ते जो भेंट लाए हैं उसे देख ले। पर उसने मेरी आँखें खोल दीं। आज तक मैंने आपके साथ बड़ा ही मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया है।''

ये बातें सुनकर चैतन्य फूला न समाया। वह इस खुशी में यह भूल गया कि उसके पैर में मोच आई है और दस हज़ार मूल्य का हार खो गया है। इसके बाद वह अपनी पत्नी का सहारा लेकर घर के भीतर चला आया।

दूसरे दिन सवेरे चैतन्य चबूतरे पर बैठकर जयराम का इन्तज़ार कर रहा था। तभी शहर का वह जौहरी आ पहुँचा, जिसके यहाँ से चैतन्य ने हार खरीदा था। वह बोला- ''माफ कीजियेगा, कल हमारी दुकान के कर्मचारी ने हार वाली पेटी के बदले उसी प्रकार की खाली पेटी आपके हाथ में दे दी। रात को हमें अपनी भूल मालूम हुई।''

यह कहकर दुकानदार ने वह हार चैतन्य के हाथ में सौंप दिया। चैतन्य ने दुकान के मालिक की ईमानदारी की तारीफ़ की।

इसके बाद चैतन्य थोड़ी देर तक जयराम के इन्तज़ार में बैठा रहा। जयराम आ पहुँचा। वह कुछ कहने ही वाला था कि चैतन्य ने उसको रोककर हार दिखाते हुए कहा, ''अरे जयराम! कल मैं हार के खो जाने के भ्रम में पड़ गया था। यह अच्छा ही हुआ। जानते हो, तुम्हारी मालकिन के अन्दर कैसा परिवर्तन हुआ है? हम हार को दुकान पर ही छोड़ आए थे। उस दुकान का मालिक थोड़ी देर पहले यह हार दे गया है। अब तुम्हें हार को लेकर परेशान होने की कोई ज़रुरत नहीं है। जाओ अपना काम देखो।''

जयराम दोनों हाथ उठाकर चैतन्य को प्रणाम करके बोला- ''मालिक, काशीराम पर हार चुराने का आरोप लगाना मेरे लिए भी अच्छा ही हुआ है।''

''किस तरह से?'' चैतन्य ने पूछा।

''मैंने घर लौटते ही पत्नी को उसके नाना के घर भेज दिया। काशीराम यहाँ पर इस ख्याल से आया था कि मौत की घड़ियाँ गिन रहे बूढ़े नाना अपनी बची-खुची सम्पत्ति उसे दे देंगे। जब नाना ने उसे कुछ नहीं दिया तो वह उन्हें गालियाँ देता हुआ अपने गाँव लौट गया। मेरी पत्नी ने नाना की सेवा की। इस पर खुश होकर बूढ़े ने मेरी पत्नी को अपनी सम्पत्ति दे दी।'' जयराम ने कहा।

''वाह-वाह, तुम तो बड़े भाग्यवान् हो। लेकिन हाँ, तुमने यह तो बताया ही नहीं कि बूढ़ा कितनी सम्पत्ति छोड़ गया है? भारी रकम तो नहीं?'' चेतन ने पूछा।

''जी हाँ मालिक। मैं उस संपत्ति को पूँजी बनाकर कोई व्यापार शुरु करना चाहता हूँ।'' जयराम ने विनयपूर्वक उत्तर दिया।

यह उत्तर सुनने के बाद चैतन्य को इस बात का दुःख हुआ कि रात को वह नाहक ही जयराम पर बिगड़ गया था। इसके बाद वह जयराम की ओर स्नेह भरी दृष्टि दौड़ाकर बोला- ''आखिर इस हार ने हम दोनों का भला किया है। मुझे इस बात की खुशी है कि तुम व्यापार शुरु करने के बाद अपने पैरों पर खड़े हो जाओगे। तुम जो व्यापार करने जा रहे हो, उसमें अगर मेरी मदद की ज़रुरत पड़े, तो निस्संकोच बताना। मदद करके मुझे बहुत खुशी होगी।''

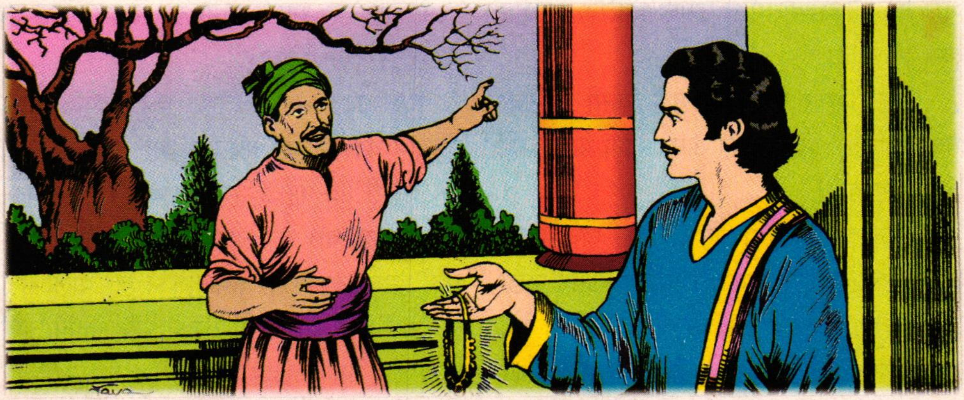

खजांची का चयन

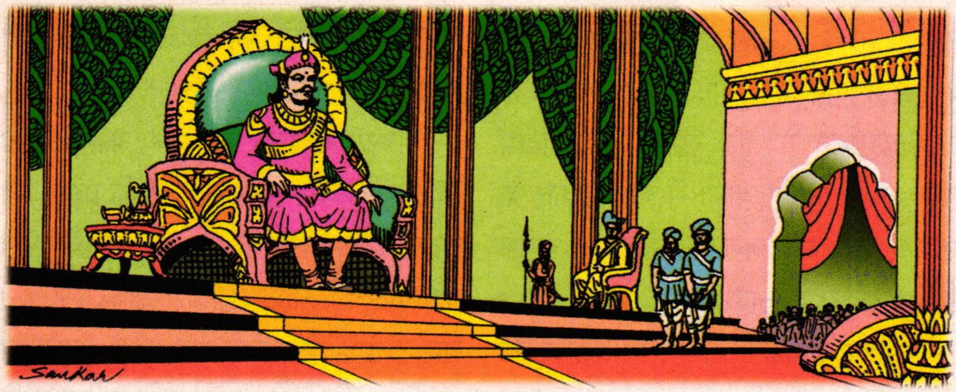

कलिंग के राजा चन्द्रहास के दरबार में खजांची का पद खाली पडा था। यह एक महत्वपूर्ण पद था जो राज्य के सारे पैसे का हिसाब रखने के लिए था। किसी उपयुक्त और भरोसेमन्द आदमी को खजांची के पद पर नियुक्त करने के प्रयास किए गए। इन परीक्षाओं के अन्त में संदीप और संजय नाम के दो युवकों का चयन किया गया। वे दोनों ही बराबर कुशल थे। इसलिए किसे खजांची बनाया जाए इसका निश्चय नहीं हो पा रहा था।

उसी राज्य में, कांचीपेठ गाँव में बृहस्पति नामक एक विद्वान रहता था। अपने प्रधानमन्त्री की सलाह पर चन्द्रहास ने बृहस्पति को एक पत्र लिखा और इन दोनों युवकों को पत्र ले जाकर बृहस्पति को देने को कहा।

राजा का पत्र पढ़कर मन ही मन मुस्कुराते हुए बृहस्पति ने दोनों का स्वागत किया और उन्हें एक पृथक् कमरा दे दिया गया।

भोजन बन जाने पर बृहस्पति ने उन्हें हाथ-पैर धोने के लिए पानी की बाल्टियाँ दीं। उन्होंने स्वयं उनकी प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रखा। जब उन्होंने भोजन कर लिया तो बृहस्पति ने राजा के पत्र का उत्तर लिखा और उन्हें पत्र देकर विदा किया। उनसे पत्र प्राप्त करके राजा ने पत्र पढ़ा और उसकी टिप्पणियों को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। तुरन्त ही राजा ने संदीप को खजांची बनाने के ऐलान कर दिया।

संजय यह नहीं समझ पाया कि बृहस्पति ने संदीप को उससे बेहतर कैसे पाया। उसने अपने विचार राजा को बताए और बोला, ''महाराज, पढ़ाई-लिखाई में हम एकदम बराबर हैं, तो आपने संदीप को मुझसे बेहतर कैसे पाया?''

इसपर राजा ने पत्र की सामग्री दरबार में पढ़कर सुनाई और कहा, ''संजय, केवल पढ़ाई

ही सब-कुछ नहीं होती। कोई व्यक्ति कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो, यदि वह चरित्रवान नहीं है, तो वह मेरे लिए बेकार है। तुम लोगों की खान-पान की आदतों को परखने के लिए बृहस्पति ने तुम्हें रसीले खाद्य पदार्थ दिए। तुमने अपनी थाली में सभी प्रकार के भोजन रख लिए जबकि सन्दीप ने केवल सीमित प्रकार के खाद्य पदार्थ लिए।''

''संदीप ने केवल उतना लिया जितने की उसे आवश्यकता थी और सन्तोष के साथ अपना भोजन समाप्त किया। तुमने अपनी थाली के सभी पदार्थ समाप्त नहीं किए और अंतत: अधिकांश भोजन व्यर्थ गया। अपनी भोजन की आदतों से तुम लोगों ने अपनी चारित्रिक विशेषताओं को उजागर किया। संदीप ने अपनी मितव्ययता दिखाई जबकि तुमने अपनी लापरवाही। अत:, मैंने संदीप को नियुक्त करने का निश्चय किया, जो सावधानी बरतने वाला इन्सान है।''

''किसी खजांची का मुख्य कार्य अपनी आदतों में ध्यान से काम करने की प्रवृत्ति को रखना और मितव्ययी होना है। अपनी खाने की आदतों में बहुत सलीका रखकर संदीप ने यह दर्शाया कि उसमें यह अति-महत्त्वपूर्ण गुण है। इसलिए मैंने यह पाया कि वही खजांची बनने के योग्य है।''

यह स्पष्टीकरण और राजा का आदेश सुनकर संजय कुछ न बोल सका। उसने बिना कुछ और कहे संदीप को बधाई दी और वहाँ से चला गया। ***- श्री एम मुरली मोहन द्वारा रचित***

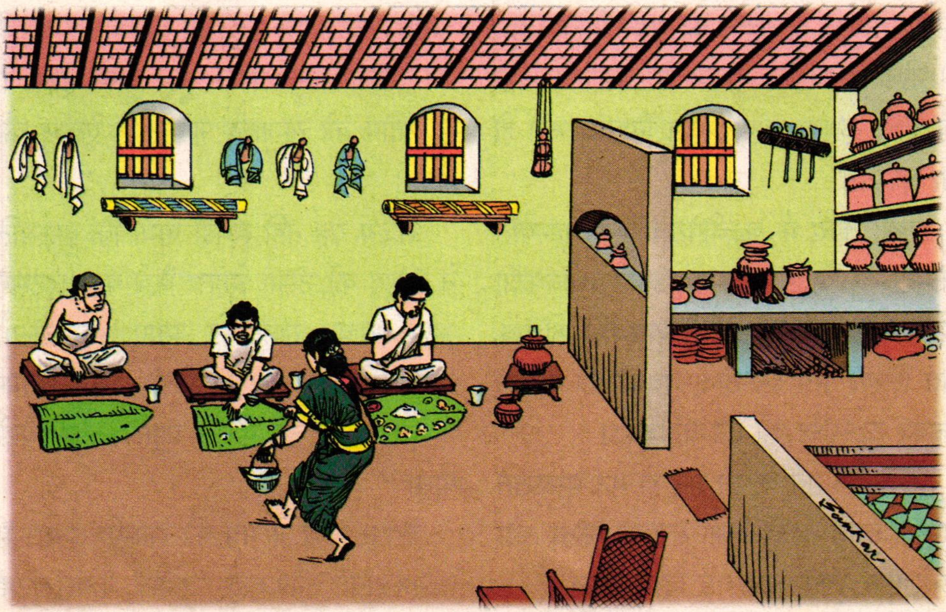

कपड़े खाने वाली महिला

कर्नाटक में तुरुवेकेरे के निकट लोग अपने कपड़े बाहर सूखने नहीं डालते। जानते हैं क्यों? इसका कारण यह है कि ३५ वर्षीया बंगारी उन्हें खा जाती है!

उसकी माँ, शिवम्मा, उसे नियमित रूप से प्लैनटेन खिलाती है जिससे कि उसे अपच न हो। शिवम्मा के मुताबिक, बंगारी की ये अजीब आदत एकदम बचपन से शुरू हुई। जैसे-जैसे बंगारी बड़ी हुई, उसे कपड़े खाने की आदत को छोड़ना मुश्किल लगने लगा। और अब तो स्थिति यह है कि जब घर का 'भोजन' समाप्त हो जाता है, तो वह बाहर जाकर पड़ोस के घरों में अपना भोजन तलाशती है!

मिट्टी का दीपक असामान्य मौतों को रोक सकता है

लेंधरा, छत्तीसगढ़ के लोगों ने एक मिट्टी के दिए को विगत १७ वर्षों से जला रखा है। क्यों? क्योंकि वे मानते हैं कि जलता हुआ दिया गाँव में अप्राकृतिक मौतों को रोकता है। यह दीपक छत्तीसगढ़ में रायगढ़ से ५० किमी दूर राधा माधव संकीर्तन आश्रम के बगल में गाँव के मुख्य मंदिर के पिछवाड़े स्थित है।

गाँव वालों ने दीपक की देख-रेख के लिए भी दो लोगों को नियुक्त कर रखा है।

आस-पास के गाँवों से बड़ी संख्या में लोग दीपक के दर्शन करने आते हैं। मंदिर ने इन दर्शनार्थियों को मुफ़्त भोजन कराने का भी प्रबन्ध कर रखा है।

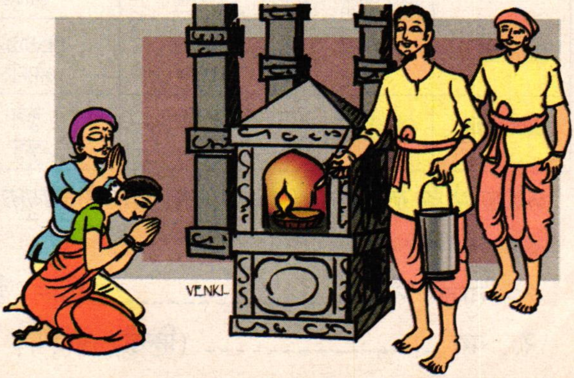

चूँ चूँ का डिब्बा

तुम्हें कितनी भारतीय भाषाएँ आती हैं? अब चन्दामामा के साथ कई भाषाएँ सीखो और आत्मविश्वास के साथ भारत को जानो। नीचे का टेबल देखकर अपनी भाषा में इन शब्दों को पढ़ो। फिर टेबल में नीचे देखो और यह जानो कि उन्हें दूसरी भाषाओं में क्या कहते हैं।

English	What	When	Where	Why	How
Hindi	क्या	कब	कहाँ	क्यों	कैसे
Telugu	ఏమి एमी	ఎప్పుడు एप्पुडु	ఎక్కడ एक्कडा	ఎందుకు एनदुकु	ఎలా एला
Tamil	என்ன एन्ना	எப்போது एप्पूथु	எங்கே एनगे	ஏன் एन	எப்படி एप्पड़ी
Bengali	কি की	কখন कोखों	কোথায় कोथे	কেন केनो	কিভাবে किवाबे
Marathi	काय काय	केव्हां केव्हां	कोठे कोठे	कशाला/कां कशाला/कां	कसे कसे
Kannada	ಏನು एनु	ಯಾವಾಗ यावाग	ಎಲ್ಲಿ एल्लि	ಯಾಕೆ याके	ಹೇಗೆ हेगे
Oriya	କଣ कान	କେତେବେଳେ कतबल	କେଉଁଠାରେ केउन्थारे	କାହିଁକି कहिन्की	କିପରି किपारी
Gujarati	શું शुं	ક્યારે क्यारे	કેમ/શા માટે केम/शा माटे	ક્યાં क्यां	કેવી રીતે केवी रीते
Assamese	কি कि	কেতিয়া केतिया	ক'ত कोत	কিয় कियो	কেনেকৈ केनेकोई
Malayalam	എന്ത് एन्थु	എപ്പോൾ एप्पोल	എവിടെ एवाइड	എന്തുകൊണ്ട് एन्थुकोन्डु	എങ്ങനെ एन्गाने
Santali	ᱪᱮᱫ चेद	ᱛᱤᱥᱚᱜ तिसोग	ᱚᱠᱟᱨᱮ ओकारे	ᱪᱮᱫᱟᱜ चेदाग	ᱪᱮᱫ ᱞᱮᱠᱟᱨᱮ चेद लेकारे
Sanskrit	किम् किम	कदा कदा	कुत्र कुत्र	किमर्थं किमर्थम्	केन प्रकारे केन प्रकारे

कोष्ठक में दी गई भाषा देखें और उस भाषा में उपयुक्त शब्द लिखकर वाक्य को पूरा करें।

१. तुम्हारा नाम _______________ (तमिल) है?

२. बस _______________ (हिन्दी) आएगी?

English	Here	There	Before	After	Because
Hindi	यहाँ	वहाँ	पूर्व	पश्चात	क्योंकि
Telugu	ఇక్కడ इक्कडा	అక్కడ अक्कडा	ముందు मुन्दु	తర్వాత तरवात	అందుచేత अन्दुचीत
Tamil	இங்கே इंगे	அங்கே अंगे	முன் मुन	பின் पिन	ஏனெனில் एनेनिल
Bengali	এখানে एखाने	সেখানে सेखाने	আগে आगे	পরে पोरे	কারণ कारोन
Marathi	इथे इथे	तिथे तिथे	आधि आधि	नंतर नन्तर	कारण की कारण की
Kannada	ಇಲ್ಲಿ इल्लि	ಅಲ್ಲಿ अल्लि	ಮೊದಲು मोदालु	ನಂತರ नामतारा	ಯಾಕೆಂದರೆ याकेन्दरे
Oriya	ଏଠାରେ एथारे	ସେଠାରେ सेथारे	ପୂର୍ବରୁ पुर्बारु	ପରେ पारे	କାରଣ कारन
Gujarati	અહીં अही	ત્યાં त्यां	પહેલા पहेला	પછી पछी	કારણ કે कारण के
Assamese	ইয়াত इयात	তাত टात	আগতে आगोते	পিছত पिसोत	কাৰণ कारोन
Malayalam	ഇവിടെ इविदे	അവിടെ आविदे	മുമ്പ് मुम्पु	ശേഷം सेशाम	കാരണം कारनम
Santali	ᱱᱚᱸᱰᱮ नोन्दे	ᱦᱟᱸᱰᱮ हान्दे	ᱢᱟᱲᱟᱝ मादन्ग	ᱛᱟᱭᱚᱢ तायोम	ᱠᱷᱟᱹᱛᱤᱨ खातिर
Sanskrit	अत्र अत्र	तत्र तत्र	पूर्वं पूर्वम्	पश्चात् पश्चात	यतः यतः

३. बॉल ___________ (असमिया) है?

४. तुमने नाश्ता ___________ (संथाली) नहीं किया?

५. पार्टी ____________ (मलयालम) थी?

६. दुकान पास ही में है; ठीक ____________ (तेलुगु)।

७. मेरा विद्यालय _______________ (मराठी) पहाड़ी पर है।

८. मेरी दादी मुझसे _______________ जाग जाती हैं। (गुजराती)

९. हमारी अंग्रेज़ी की क्लास है लंच,के ___________ होती है। (कन्नड़)

१०. सेब ज़मीन पर गुरूत्वाकर्षण के ____________ गिरता है। (बंगाली)

इतिहास का पन्ना

अग्नि पंख

१४ मई, ६०६ ईस्वी, विंध्य पर्वतमाला की निचली पहाड़ियों पर...

पलायन।

यही कुंजी थी।

वह हाँफती हुई एक पेड़ के तने से टिक गई। उसके कपड़े तार-तार हो रहे थे; जो कभी रेशम का शानदार कपड़ा रहा होगा वह अब भूरे रंग के बोरे जैसा लग रहा था। कभी उसके पास आभूषण थे - लेकिन अब उसका दिमाग बड़ी मुश्किल से ही उन हारों और बाजूबन्दों की छवि सोच पाता था जिन्हें कभी वह बड़ी लापरवाही के साथ पहना करती थी।

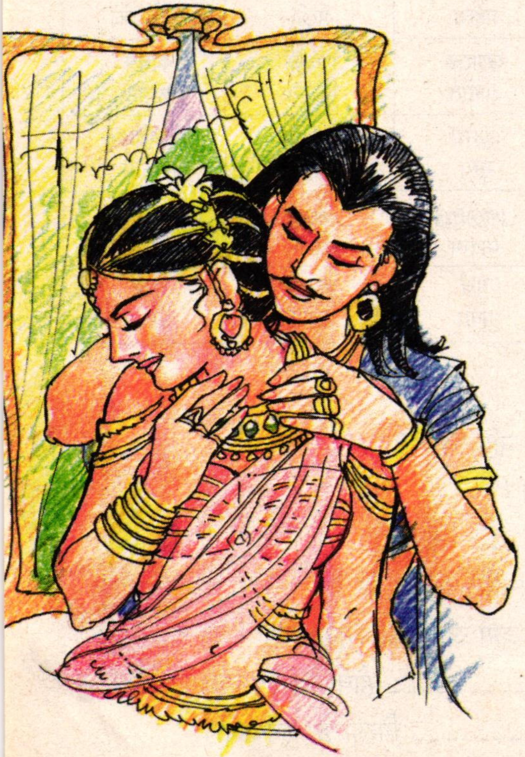

वह भोजन के बारे में भी बहुत कम याद कर पाती थी - हालाँकि वह भी बहुत था। उसे ये अवश्य याद था कि वह बड़े ठाठ से रहती थी। शायद उसके मस्तिष्क को कोई गहरा सदमा लगा था।

पुरानी यादों ने उसे घेर लिया - नहीं - नहीं -नहीं...

***

कन्नौज का राजमहल, कन्नौज नगर, ३० अप्रैल, ६०६ ईस्वी

'क्या हमें उसकी मेहमाननवाज़ी करना चाहिए?'' सोने का एक शानदार हार पहनते हुए उसने पूछा।

उस सुबह में नीचे की गलियों से आती चीखने-चिलालाने और गाने-बजाने की आवाज़ें घुली-मिली थीं; पूरा नगर मालवा से आए आगन्तुकों का खुले दिल से स्वागत कर रहा था।

राजमहल की दीवारों पर वंदनवार लगी थी, जो किले की फ़सील और दरवाज़ों तक फैली थी;

''क्या यह कन्नौज की महारानी ही कह रही

हैं?'' कन्नौज और उसके हृदय के राजा गृहवर्मन नजदीक आकर बोले। ''देवगुप्त केवल मालवा के राजा की नहीं अपितु हमारे मित्र और सहयोगी भी हैं। उनके लिए यह स्वागत कम ही है।''

मेज के एक रेशमी तकिए पर से उसने एक मुकुट उठाया, जो बहुत ही सरल सा सोने का गोल तार था, जिसमें लालमणियाँ और पन्ने लगे थे। लेकिन ये इसलिए कि कन्नौज के राजा प्रजा की समृद्धि के बारे में अधिक चिंतित रहते थे, स्वयं अपनी नहीं। उसने धीरे से उसे उनके सिर पर रख दिया।

''अब मैं राजा हूँ,'' उन्होंने कहा।

''आपको अपना राजा होना सिद्ध करने के लिए किसी मुकुट की आवश्यकता नहीं है।''

''और तुम्हें सुन्दर दिखने के लिए रत्नों-आभूषणों की आवश्यकता नहीं है - फिर भी, मैं तुम्हें यह देने से खुद को रोक नहीं पा रहा।'' उन्होंने एक रेशमी कपड़ा निकाला, जिसमें शानदार कलाकारी से बना गरुड़ की आकृति का एक हार था - आग से दहकती लाल मणियों की आँखें, पन्ने के पंख और हीरों जड़ा बाकी शरीर।

''पक्षियों के राजा का कन्नौज की रानी को सलाम,'' उसे रानी के गले पर बाँधते हुए गृहवर्मन फुसफुसाए, और रानी मुस्कुराने लगी।

किसी के खँखारने की आवाज़ से उसका ध्यान बँटा। राजा का संतरी दरवाज़े के पास ही अदब से खड़ा था। ''महाराज, मालवा के राजा सिंहासन कक्ष में भोर की मुलाकात करना चाहते हैं।''

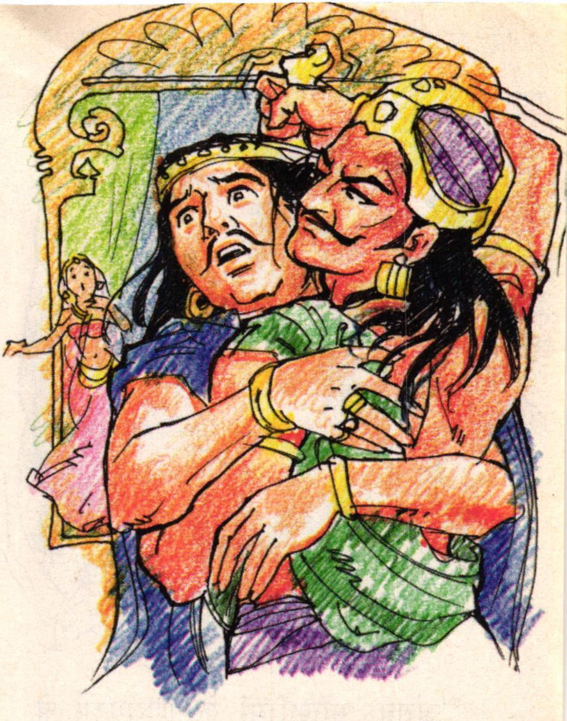

''हे भगवान! हम आपस में इतने औपचारिक नहीं हैं,'' गृहवर्मन ने हँसकर कहा। ''कृपया उन्हें राजमहल में ले आएँ। हम और रानी उनसे वहीं मिलेंगे।''

रानी ने टोका। ''इतना भी क्या आवश्यक है कि उन्हें हमारे कक्ष में ही बुलाया जाए - ''

''तो क्या हुआ प्रिये? इतनी औपचारिकता की भी क्या आवश्यकता है जब हम देवगुप्त को इतने समय से जानते हैं?''

मिनटों में संतरी मालवा के शानदार राजा को ले आया। यदि वह अपने पति में न खोई होती, तो देखती कि वह युद्ध की पोशाक में था। उसके कपड़े गम्भीरता लिए थे पर उसकी मुस्कुराहट में आतुरता थी।

''देव!'' गृहवर्मा आगे बढ़े।

''अंततः मौखारियों के शिरोपुरुष से मुलाकात,'' देवगुप्त हँसा।

''इतनी औपचारिकता!'' दोनों ने स्पष्ट दृष्टिगोचर प्रेम के साथ अलिंगन किया।

रानी के दिमाग में घंटी सी बजी।

''हे भगवान!'' उसने उसांस ली।

कई चीज़ें एक साथ हुईं। संतरी आगे को लपका - गृहवर्मन गुर्राया - देवगुप्त ने गृहवर्मन को एक हाथ से आगोश में लिया और एक तेज़ धार वाला चाकू उसकी पीठ में उतार दिया।

रानी चिल्लाई।

***

१४ मई, ६०६ ईस्वी, विंध्य पर्वतमाला की निचली पहाड़ियों पर

जंगल में उसकी चीखें गूँज रही थीं।

जमीन पर पत्तों के साथ बिछे कँटीली झाड़ियों की वजह से उसके पैरों से खून निकलने लगा। उसे ऐसा कोई समय याद नहीं था जब वह ज़मीन पर अपने पैरों से चली हो - उसके माता-पिता, भाई और पति, सब उसे पालकी में ही चलने की सलाह देते थे।

हमले के बाद की सब यादें धुँधली सी थीं। उसकी अपनी तीव्र चीखें। उसके पति की निस्तेज आँखें। सारी जगह में संतरी और पहरेदार।

''मालवा की सेनाएँ बढ़ी चली आ रही हैं - हम पर चढ़ाई हो गई है!''

''देवगुप्त, दग़ाबाज़!'' यह उनके मन्त्री की आवाज़ थी जो पता नहीं कब उसने कक्ष में आ गया था।

और तब उसने खुद को बुरी तरह जकड़ा हुआ पाया।

''उन्हें छोड़ दो - दुष्टों!''

उसने बेहोश होने से पहले एक अवहेलनापूर्ण और कठोर हँसी सुनी।

घंटों बाद, एक अँधेरे, सीलन भरे कमरे - कालकोठरी - में उसकी आँख खुली। अपने विवाह के पहले वर्ष में उसने वहाँ जाकर देखा था, और वह कभी चीखते-चिलालाते कैदियों की आवाज़ें नहीं भूल पायी थी। अब वह स्वयं यहीं मरेगी।

लेकिन वह मरी नहीं। उसके संतरियों ने - कन्नौज के वफादार सिपाहियों ने उसे खोल दिया था, और कपड़ों की एक पोटली और कुछ पैसे उसके हाथ में देकर उसे लगभग घसीटते हुए

जंगल में ले जाकर छोड़ दिया।

तभी से, वह भागती रही थी।

उसे इसके अलावा कुछ नहीं पता था कि वह विंध्य क्षेत्र में है। किसी सहज वृत्ति के वशीभूत वह चलती जा रही थी, हालाँकि भयानक छवियाँ उसे परेशान भी कर रही थीं: गृहवर्मन का मरना, उसके महल में अशान्ति; कालकोठरी में बिताया समय। क्या कन्नौज बच पाया? अब उसकी क्या स्थिति होगी?

और थानेश्वर - उसके माता-पिता के घर का क्या? कन्नौज पर हमला करने वालों ने उसके भाइयों पर भी हमला किया होगा? उसके पिता कुछ महीने पहले स्वर्ग सिधार गए थे - उसके भाई छोटे थे। इतने छोटे कि शायद देवगुप्त ने उन्हें अब तक मार ही दिया होगा।

उसका भोजन दो दिन पहले समाप्त हो चुका था। उसे पता नहीं था कि पानी का कोई स्रोत कहाँ होगा।

अचानक कुछ निर्णय करके वह सीधी हो गई। जंगल की ज़मीन सूखी टहनियों और डालों से भरी थी।

पास ही कहीं झाड़ियों में सरसराहट हुई। उसने उसपर ध्यान नहीं दिया। उसने एक छोटी सी आग जलाई और इक्ट्ठी की हुई टहनियों को जला दिया। यह उसकी चिता होगी। वह उसमें प्रवेश करने को तैयार थी।

झाड़ियों में और आवाज़ हुई। कोई आ रहा था। दुश्मनों के उस तक पहुँचने से पहले वह मर चुकी होगी।

"नहीं!" कोई चीखा। "नहीं - राजश्री! नहीं!"

वह जड़ होकर रुक गई। यह नहीं हो सकता था - यह उसकी आवाज़ नहीं हो सकती थी जिससे उसे अपने पति के अलावा दुनिया में सबसे अधिक प्रेम था।

और फिर वह उसके सामने आ गया, साँस फूली हुई, बाल बिखरे हुए, कपड़े फटे हुए। "राजश्री - नहीं।"

"हर्ष!" वह काँपते हुए मुस्कुराई। "मेरे भाई! तुम आ गए!" अब वह सुरक्षित थी।

"हाँ।" थानेश्वर का राजकुमार हर्षवर्धन मुस्कुराया, "मैं आ गया हूँ।"

- पवित्रा श्रीनिवासन

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama! Go to www.chandamama.com & subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ....

Date of Birth: .... Sex :..............................

Address: ....

....

....

.... City: ....

State:.............................. Pin:..............................

Telephone:..

Mobile:..

Email:..

Subscription Number (for renewals):..............................

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..............................

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on..............................

....bank.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',MIDC, Andheri (East),
Mumbai-400093. Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Get surprise gifts by subscribing this month **

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 240	Rs. 375
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 190	Rs. 300
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		Rs. 35	Rs. 80	Rs. 145	Rs. 225

** conditions apply

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

शिथिलालय

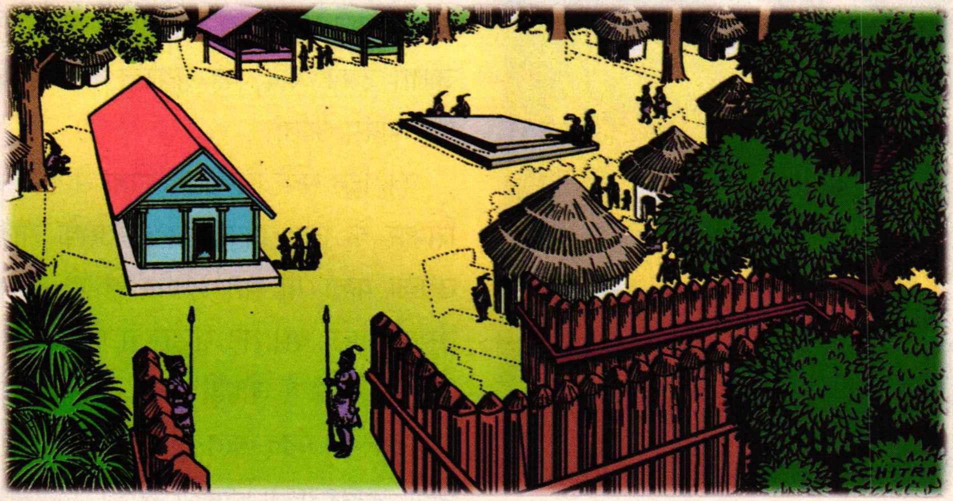

पूर्वी घाटी के वन प्रान्तों में कभी शबर जाति के बहुत-से गाँव हुआ करते थे। उनमें कुम्भार टीला नाम एक गाँव था। गाँव का सरदार शिवाल था। उसकी उम्र सबसे अधिक थी। उसका अट्ठारह वर्ष से अधिक उम्र का शिखिमुख नामक लड़का था। उसके पिता उसको बहुत चाहते थे क्योंकि उसका जन्म तब हुआ था जब पिता अधेड़ हो चुके थे। स्वाभाविक ही, पिता ने अपने पुत्र से कई उम्मीदें लगा रखी थीं।

क्योंकि शिखिमुख शिवाल के बाद सरदार बनने वाला था, इसलिए शिवाल ने बचपन से ही उसे योग्य गुरुओं से तलवार चलाने, जंगलों में, नदियों में शिकार करके भोजन प्राप्त करने की विद्याओं का अभ्यास करवाया था। इन सब में शिखिमुख, अपनी उम्र के पंद्रहवें वर्ष में ही पारंगत हो गया था।

कुम्भार टीले में ही नहीं, आस-पास के गाँवों में भी उससे बढ़कर शिकारी, बहादुर और सूझ-बूझ वाला कोई न था।

जब लोग उसके बेटे की प्रशंसा करते, तो शिवाल फूला न समाता था। लेकिन खुशी के साथ ही उसे बेटे की कुछ चिन्ता भी थी। वह चाहता था कि उसका बेटा भी पढ़े-लिखे, पर शिखिमुख की यह शिक्षा, अक्षर ज्ञान के साथ ही समाप्त हो गई थी।

कुम्भार टीले के सौ-डेढ़ सौ मील के प्रान्त में सिवाय शिवाल के शबरों में कोई पढ़ा-लिखा न था। शबर लोग जंगली थे। वे वनों में और पर्वतों पर ही रहा करते थे। शिकार और

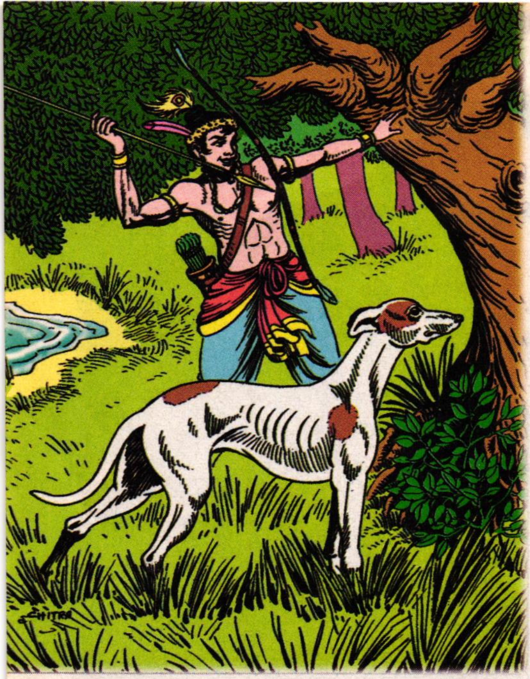

पशुओं पर ही वे अपना जीवन निर्वाह करते थे। वे नगरों के जीवन से परिचित न थे और उनका नगरों से कोई सम्बन्ध भी न था। अगर इन हालातों में वे पढ़ने लिखने की ओर ध्यान न देते थे, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात न थी।

पर शिवाल जब नवयुवक था, तब उसे एक क्षत्रिय का साथ मिल भया था। उसने उसके साथ देश-विदेश घूमा औ र शिकार करना और पढ़ना-लिखना सीखा। अपनी यात्राओं के दौरान उसे शिक्षा प्राप्त करने के जीवन में कई लाभ दिखाई दिए। अतः उसने अपने बेटे को पढ़ाने-लिखाने का काफी प्रयत्न किया। लेकिन शिखिमुख ने इस बारे में अपने पिता को बहुत निराश किया।

रोज, सूर्य के उदय होते ही, शिखिमुख धनुष-बाण और भाला लेकर घर से निकल जाता। जाते समय वह अपने पिता से कहता जाता। उसके बाद, वह सूर्यास्त के बाद ही गाँव वापस आता।

एक दिन सवेरे शिखिमुख पिता से कहकर शिकार के लिए निकल पड़ा। उसके साथ उसका कुत्ता भी था। छुटपन से ही उसने उसको पाला था। वह साहस में शेर सा था और चालाकी में लोमड़ी जैसा। जंगलों में वे एक दूसरे की मदद करते घूमा-फिरा करते थे। कुत्ता, सूँघकर रास्ता दिखाया करता। शिखिमुख उसके पीछे जाता और जंगली जानवरों का शिकार किया करता।

उस दिन, शिखिमुख और उसका कुत्ता जंगल में बहुत दूर निकल गए। हालाँकि दुपहर हो गई थी, पर न मालूम क्यों, उन्हें उस दिन न कोई हिरण मिला, न सूअर ही, न कोई और जानवर। जंगल भी जाने क्यों सूना-सूना था। बन्दर रह-रहकर पेड़ों की टहनियों के पीछे जा छुपते। कभी शेर के इस तरफ भागने की ध्वनि सुनाई देती, तो कभी उस तरफ।

"यह खामोशी कैसी है? क्या जंगल को कोई बीमारी हो गई है? ये जानवर कहाँ छुप गए हैं? शेर आदि भी ऐसे क्यों दौड़ रहे हैं?" कहकर शिखिमुख ने अपने कुत्ते की ओर देखा। कुत्ता, जमीन सूँघता हुआ कुछ दूर

गया। जब मालिक पीछे नहीं गया, तो वह धीमे-धीमे भौंकने लगा।

शिखिमुख ने कुत्ते की ओर घूरकर पूछा- "क्यों धूप में क्या तुझे पागलपन चढ़ गया है? तेरा भौकना सुनकर आस-पास के जानवर भाग नहीं जाएँगे?"

कुत्ता थोड़ी देर चुप रहा। फिर जमीन सूँघकर आगे भागा और जब तब भी उसका मालिक न हिला तो वह पीछे लौट आया और उसके चारों ओर मँडराने लगा। कुत्ते को देखकर उसे लगा कि ज़रुर वह कुछ बताना चाहता है। वहाँ पड़े एक ठूँठ पर खड़े होकर उसने उस ओर देखा, जिस ओर उसका कुत्ता भागा-भागा गया था। उसे न कोई जन्तु दिखाई दिया न मनुष्य ही, परन्तु कुत्ता अब भी धीमे-धीमे भौंक रहा था।

शिखिमुख अपने कुत्ते को बहुत अच्छी तरह जानता था। उसने उसे सहलाकर चुप किया और वह एक पेड़ पर चढ़ा और कुत्ता जिस ओर जाना चाहता था, उस ओर ध्यान से देखा।

उसकी दृष्टि एक विचित्र शिकारी पर पड़ी। घोड़े और घुड़सवार, दोनों ने कवच पहन रखे थे। घुड़सवार की कमर में एक लम्बी तलवार लटक रही थी और दाएँ हाथ में एक बड़ा भाला था। उसके सिरे पर एक पीले लाल रंग की झंडी फड़फड़ा रही थी।

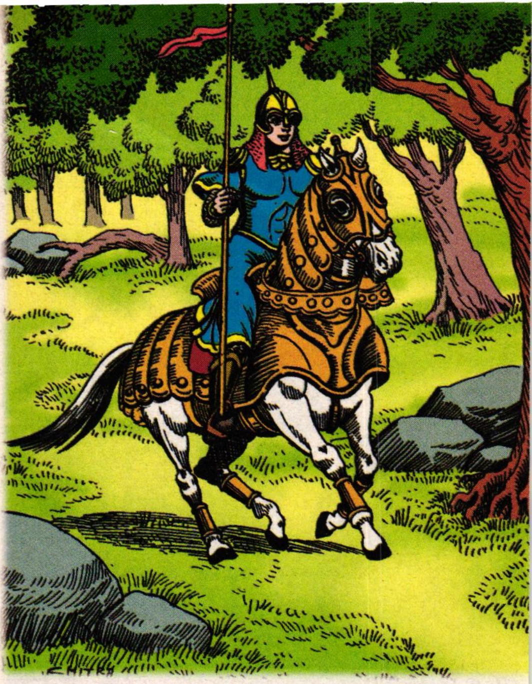

"यह कौन है? पिता पुराण की कहानियाँ सुनाते समय अतिरथ और महारथ जैसे नाम लिया करते थे। शायद ये उनमें से कोई हैं। पर साथ रथ क्यों नहीं है? वाह क्या पोशाक पहन रखी है!" सोचता-सोचता शिखिमुख हँसने लगा। कवच पहने योद्धा उसने इससे पहले कभी न देखा था। एक दो बार उसने राजा के सैनिकों को देखा तो था, पर उनको इस तरह कवच पहने नहीं पाया था।

शिखिमुख उसकी ओर यूँ चकित होकर देख ही रखा था कि उसको एक और आश्यर्चजनक और भयानक दृश्य दिखशई दिया। आठ-दस आदमी, जो देखने में डाकू लगते थे घुड़सवार के रास्ते पर उसके आगे और पीछे पेड़ों की टहनियों में से एक साथ

कूदे। घोड़ा बिदक उठा। घुड़सवार ने उसे रोका। फिर वह जोर से चिल्लाते हुए तलवार निकालकर उनसे जूझ उठा।

शिखिमुख को उस घुड़सवार को मुसीबत में देखकर उसपर बड़ी दया आई। एक पर दस का एक साथ आक्रमण करना अधर्म है, अक्षम्य अपराध है। लेकिन शत्रु की संख्या देखकर भी वह घुड़सवार न डरा। इसलिए शिखिमुख ने उसे आदर से देखा। एक क्षण में उसने फैसला किया, ''मुझे उसकी मदद करनी होगी।'' उसने अपने कुत्ते को सावधान किया और पेड़ों की टहनियाँ पकड़कर कूदता फाँदता क्षण भर में ही वहाँ पहुँच गया।

इस बीच घुड़सवार डाकुओं पर तलवार से वार कर रहा था। ''विक्रमकेसरी की तलवार बलि चाहती है। नीचो! भागो मत, मैं अपना प्रताप दिखाऊँगा'' वह ज़ोर-ज़ोर से कह रहा था।

इतने में, एक डाकू ने छुपकर घोड़े के पाँव पर तलवार से वार किया। घोड़ा घायल होकर एक ओर मुड़ गया। घुड़सवार उस झटके के कारण नीचे गिरा और फिर खड़ा होकर एक हाथ में भाला और दूसरे में तलवार लेकर डाकुओं का मुकाबला करने लगा।

''शबर माता की जय!'' कहता हुआ शिखिमुख पेड़ पर से डाकुओं के बीच कूदा। इस बीच उसका कुत्ता एक डाकू पर लपका और उसका गला पकड़ने के लिए उछला। उसके हाथ से तलवार छूट गई और वह जमीन पर जा गिरा। तलवारों की झन्कार के बीच उसके गले की घुटी-घुटी चीखें भी सुनाई दीं।

घुड़सवार इस पशोपेश में था कि जो आदमी आया है, वह शत्रु है अथवा मित्र। वह एक क्षण स्तब्ध खड़ा रहा। शिखिमुख को अपने भाले से डाकुओं की ओर निशाना लेते देखकर उसने कहा - ''दोस्त इन दुष्टों में से किसी को भी जीवित न जाने देना।''

इतने में, जंगल में दूरी पर सीटी बजी। तुरन्त ही, डाकू उस घुड़सवार और शिखिमुख को छोड़कर वहाँ से भागने लगे। चूँकि घुड़सवार ने भारी कवच पहन रखा था, अतः

वह उनके पीछे न दौड़ सका। शिखिमुख और उसके कुत्ते ने उनको कुछ दूर खदेड़ा। जब वे पेड़ों के झुरमुट में उनकी पहुँच से दूर निकल गए तो शिखिमुख और उसका कुत्ता लौटकर घुड़सवार के पास चले आए।

उन्होंने देखा कि घुड़सवार अपने घोड़े के घाव को ध्यान से देख रहा था। शिखिमुख ने उसके पास जाकर कहा, ''ये दुष्ट भाग गए हैं। आपको इस जंगल में अकेला नहीं आना चाहिए था।

आपको तो कोई चोट नहीं आई? गनीमत है। आइये घोड़े के घाव पर कोई दवा लगाएँ।'' कहकर वह पास के पेड़ों से पत्ते तोड़ने लगा।

घुड़सवार बिना कुछ कहे शिखिमुख को एड़ी से चोटी तक देखने लगा। वह समझ गया कि वह शबर जंगली जाति का है। उसने उसकी विपत्ति में सहायता भी की थी। ''शबर माता की जय'' कहता वह डाकुओं के बीच भी कूदा था। क्या यह सचमुच शबर है? इसमें कोई धोखा तो नहीं है? उसके मन में सवाल उठ रहे थे।

उसकी पशोपेश से अन्जान शिखिमुख ने घोड़े के पास जाकर उसको पत्तों का रस लगाते हुए सवार से प्रश्न किया - ''आपका नाम क्या है? आप इस जंगल में अकेले क्यों घूम रहे हैं?''

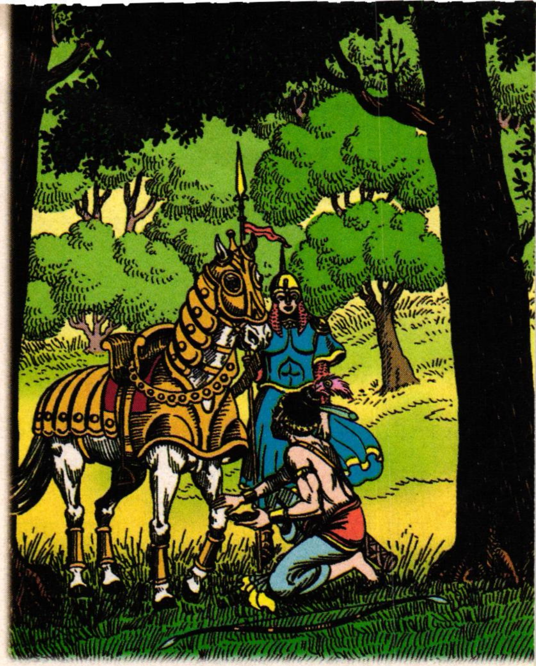

घुड़सवार जवाब देने से पहले हिचका, ''हम दोनों समान आयु के हैं, अट्ठारह-बीस वर्ष के। फिर तुम आप-आप क्यों कर रहे हो? खैर, तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देने से पहले मुझे तुमसे कुछ पूछना है।''

''क्या है वह प्रश्न?'' शिखिमुख ने घुड़सवार की बातों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

''तुम शबर जाति के हो न?'' घुड़सवार ने पूछा।

''हाँ, मेरा नाम शिखिमुख है। आप...नहीं नहीं तुम्हारा नाम क्या है?

''शिखिमुख!'' घुड़सवार ने आँखें बड़ी करके सिर हिलाते हुए पूछा, ''वह तुम्हारे बाबा का नाम है ना? क्यों? मेरा नाम विक्रम केसरी है। यह मेरे बाबा का नाम है। तुम्हारे

पिता का नाम शिवाल है, उन्होंने विक्रम केसरी के बारे में तो पहले ही बता रखा होगा? वे कुशल तो हैं ना?'' विक्रम केसरी ने पूछा।

विक्रम केसरी की बातें सुनकर शिखिमुख को ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई सपना देख रहा हो। उसने सपने में भी न सोचा था कि वह कभी उसे देखेगा।

''मेरे पिता सकुशल हैं। मैंने तुम्हारे बाबा के बारे में बहुत सुना है। तुम सूरसेन देश के हो न? लगता है तुम हमारे गाँव की ओर ही जा रहे थे। पर इस सब पर मुझे विश्वास नहीं हो पा रहा है।'' शिखिमुख ने कहा।

''अभी और कई ऐसी बातें हैं, जिनपर तुम्हें विश्वास न होगा, और जो मैं तुम्हें घर पहुँचकर बताऊँगा। इससे कुछ देर पहले जिन्होंने मुझे घेर लिया था, वे केवल डाकू नहीं हैं। वे इस जीन से लटकती थैली हुई थैली ही नहीं लेना चाहते थे, वे मेरी जान भी लेना चाहते थे। इसलिए हमारा जल्द से जल्द तुम्हारे गाँव पहुँच जाना अच्छा होगा।'' विक्रम केसरी ने कहा।

अब तक शिखिमुख भी यह जान गया था कि वह जहाँ था वह कितना भयंकर प्रदेश था। डाकू पेड़ों के पीछे छुप-छुप कर फिर उन पर हमला करने की ताक में थे।

घायल घोड़े को चलाते-चलाते शिखिमुख और विक्रम केसरी कुम्भार टीले की ओर चल पड़े। रास्ते में शिखिमुख ने एक जंगली सुअर को मारकर कन्धे पर डाल लिया। डाकुओं से फिर उनकी मुठभेड़ नहीं हुई। परन्तु अन्धेरा होने के कुछ देर बाद जब वे गाँव के पास पहुँचे तो शिवाल और उसके साथ कुछ आदमी मशालें लिए जंगल की ओर आ रहे थे।

पिता को देखकर शिखिमुख के चेहरे पर सन्तोष की आभा नज़र आने लगी। कई गाँववाले शिखिमुख को देखकर उसकी ओर जोर से चिल्लाते भागे-भागे गए।

(जारी)

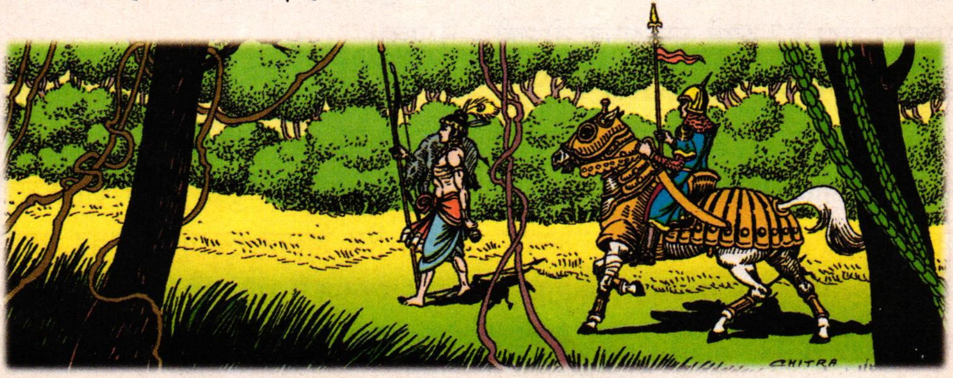

नया साम्राज्य

(चाँदी के ग्लोब जैसी वह तश्तरी आकाश में वादों से भरे चन्द्रमा की तरह तैर रही थी। और तभी मुझे अहसास हुआ कि मैं इन्सानों को कितना याद कर रहा था।)

अंतरिक्ष यान ने नीचे उतरना शुरू किया और हम सब जड़वत उसे देखते रहे। माहौल किसी अज्ञात की आशंका से बोझिल था। मैं मना रहा था कि मेरे माता-पिता उसमें हों। अचानक मुझे एक झटका सा लगा। साइबेरियन चीता अपनी समुद्र सी नीली आँखों से लगातार मुझे घूर रहा था। ''यहाँ आओ,'' वह गुर्राया, लेकिन उसके स्वर में चिढ़ नहीं थी। मुझे उसकी बात न मानने का ख्याल तक नहीं आया। मैं एकदम आज्ञाकारी की तरह उसके पास चला गया। ''यहाँ एक और मानव है। मुझे पता है।'' वह बोला। वह अपने विशाल और शानदार सिर को मेरे पास लाया। मैं उसके घने फ़र के बर्फ़ के से सफ़ेद बालों को देख सकता था। उसकी काली पट्टियाँ मन्त्रमुग्ध कर देने वाली थीं। ''यह याद रखना कि रूप बदलते रहते हैं। जो तुम्हारा भाई दिखता है, वह तुम्हें नुकसान भी पहुँचा सकता है,'' वह बोलते-बोलते रुक गया। ''दुर्भाग्य से बुराई के कई रूप होते हैं।'' और यह कहते-कहते वह चुप होकर अंतरिक्ष यान की तरफ देखने लगा। मयूरी औरोच के पास खड़ी थी और उसके होठों पर एक अजीब सी मुस्कान थिरक रही थी। अंतरिक्ष यान नजदीक आता जा रहा था। मुझे काँच की छोटी-छोटी खिड़कियों से सटे चेहरे धुँधले से दिखाई देने लगे थे। एक क्षण के लिए मैं उदास हो गया। हल्की सी आवाज़ के साथ अंतरिक्ष यान जमीन पर टिक गया। मैं साँस रोककर प्रतीक्षा करने लगा।

एक मिनिट निकला, फिर दूसरा। ऐसा लग रहा था कि अन्दर के लोग काफी समय लगा रहे थे। मैं इस स्थिति को बदलने के लिए पूरे

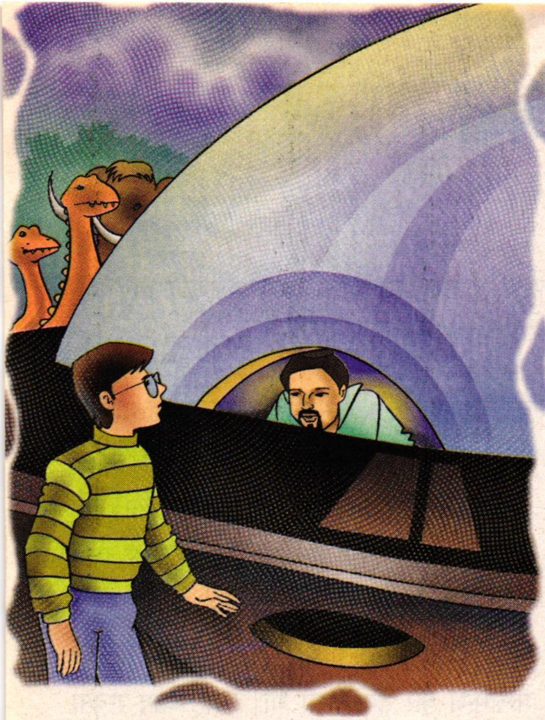

आत्मविश्वास के साथ अंतरिक्ष यान की ओर बढ़ा और चिल्लाया, "तुम लोग सुरक्षित उतर गए हो। बाहर आ जाओ! मैं शिवा हूँ, एक मानव!" इस बहादुरी से भरी घोषणा के जवाब में पूर्ण खामोशी रही। चीनी हाथी हौले से हँसा। उसपर ध्यान न देते हुए मैं एक खिड़की की ओर बढ़ा और अन्दर झाँका। विभिन्न आकृतियों और रंगों के कई चेहरे मेरी तरफ देख रहे थे। वे सब फर्श पर उकड़ूँ बैठे थे और ऐसे बेचारे लग रहे थे कि मुझे स्थिति के इतना बदल जाने पर हैरानी होने लगी।

फिर, सिर पर मच्छर अगरबत्ती जैसे घूमे हुए बालों वाला एक दुबला-पतला सा आदमी सतर्कता से उठा और खिड़की की ओर आया। "हेलो," वह बोला और मैंने उल्लास के साथ अपना हाथ हिलाकर जवाब दिया। किसी दूसरे मानव की छवि देखते ही मुझमें उत्साह का संचार हो गया। फिर उसने कहा कि वह दरवाज़े की ओर आ रहा था। मैंने सिर हिलाकर सहमति दी और खुद दरवाज़े के सामने आ गया।

उस आदमी ने दरवाज़े को थोड़ा सा खोला और बोला, "क्यों, क्या हम मर गए हैं?" मैंने हँसकर कहा, "ठीक-ठीक तो पता नहीं। हो सकता है यह सही हो, लेकिन हो सकता है ऐसा न भी हो!" बदले में वह मेरी ओर देखकर हौले से मुस्कुराया और मेरे मन में उसके लिए खेद उत्पन्न हुआ। निश्चित ही ऐसे अजीब से स्थान पर आकर उन्हें बहुत बड़ा झटका लगा होगा। मैंने अपना हाथ बढ़ाया और उसने दरवाज़े की पीछे खड़े रहकर ही मेरा हाथ पकड़ लिया।

"बाहर आओ मैंने कहा। अब तुम विलुप्त प्राणियों की भूमि, अनुनिर्वा में हो...तुम्हें पता है ना?"

"अनु... क्या?!" वह बुदबुदाया। "अनुनिर्वा, वह स्थान जहाँ सभी विलुप्त प्राणी जाते हैं। हम विलुप्त हो चुके हैं...तुम जानते हो ना?"

उस आदमी ने अजीब सी निगाहों से मेरी ओर देखा, जैसे कि उसे मेरी अक्ल ठिकाने होने पर सन्देह हो। और फिर उसने मेरे पीछे देखा...पूर्ण शान्ति से प्रतीक्षा कर रहे जानवरों की भीड़ की ओर देखा। उसका मुँह खुला का खुला रह गया और उसने तुरन्त दरवाज़ा बन्द कर दिया।

मैं इस तौर-तरीके से थोड़ा थक गया था। "दरवाज़ा खोलो!" मैं चिल्लाया। मुझे पास से निकलता एक साया सा दिखाई दिया और मैं

जल्दी से पीछे मुड़ा। वह मयूरी थी। "मैं बात करती हूँ," वह बोली।

"मानवों," वह अपनी दृढ़ और तेज़ आवाज़ में बोली। उसके शब्द पूरी जगह में इस तरह गूँजे कि मैं उछल सा पडा। "आप लोग बिना किसी डर के बाहर आ सकते हैं। ये मैं हूँ, मयूरी, एकमेव। मैं आपसे मेरे कहने पर बाहर आने का आग्रह करती हूँ। आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा।"

नीले मगरमच्छ ने तुरन्त अपना मुँह खोला, जैसे कि विरोध करना चाहता हो, लेकिन मयूरी की एक ही चेतावनी भरी नज़र ने उसे ठण्डा कर दिया। मगरमच्छ इतनी आसानी से मानने वालों में से नहीं था। उसने बगावती अन्दाज़ में अपनी पूँछ ज़मीन पर पटकी, पर कुछ बोलने की हिम्मत नहीं की। साइबेरियाई चीता धीरे से मुस्कुराया। डायनोसॉर बहनों में से एक ने मेरी ओर देखकर आँख मरी।

दरवाज़ा धीरे से खुला और वह दुबला-पतला इन्सान धीरे से अंतरिक्ष यान से बाहर आया। वह डर के कारण पीला पड़ा हुआ था। उसकी आँखों में बहुत डर दिखाई दे रहा था और उसकी पूरी बाँह पर खरोंचें थीं। उसके कपड़े गीले थे और बालों में रेत थी।

"क्या...कौन हो तुम?" उसने मयूरी की ओर देखकर पूछा। उसकी आँखों ने मयूरी के नील चेहरे और चार हाथों का मुआयना किया। मैं डर रहा था कि कहीं वह कोई चुभने वाली बात न कह दे।

"यह मयूरी है," मैंने कहा और चुप हो गया।

"हूँ...मयूरी, अच्छा...तो क्या यह...," उसने कुछ सोचते हुए अपनी ढोड़ी खुजाई। अचानक एक मैमथ उठ खड़ी हुई और वह आदमी चौंककर पीछे हटा।

"ए...ए...!" वह कमज़ोर आवाज़ में बोला।

"मैं पागल हो गया हूँ, है ना?" उसने चमत्कृत सी आवाज़ में कहा। मैमथ मस्त चाल से उसकी ओर बढ़ी और उत्सुकता से उसकी ओर देखा।

"अ...क्या तुम...तुम मैमथ हो?" आदमी ने पूछा और अपने सवाल को सोचकर खुद ही हँस पडा।

लेकिन मैमथ को इससे कोई आनन्द नहीं आया। वह अपना एक दाँत उसकी आँख के पास लाई और बोली, ''तुम चाहो तो मैं सिद्ध कर सकती हूँ।''

वह आदमी डर कर पीछे हटा। ''तुम बोल सकती हो!'' उसने आश्चर्य से उसाँस भरी।

मयूरी ने मैमथ के विशाल कान को छूकर कहा, ''तुम्हारे लिए भी कुछ सिद्ध करने का समय आएगा। अभी पीछे हटो। आओ हम अपने मेहमानों का स्वागत करें।'' उसने अपना हाथ आगे बढ़ाकर कहा, ''क्या तुम हमें अपना नाम बताओगे मानव?''

उस आदमी ने उसका हाथ पकड़ लिया किन्तु उसे हाथ मिलाने की तरह हिलाया नहीं। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसके हाथ में साँप थमा दिया हो। ''मैं शान्तनु हूँ,'' वह बोला, ''मैं उन वैज्ञानिकों में से एक हूँ जिन्हें सरकार ने इस स्थान परिवर्तन में मदद करने के लिए बुलाया था...लोगों को सर्वनाश से बचाने के लिए। हमें यह कर दिखाने के लिए दुनिया-भर के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर काम करने का आदेश दिया गया था। पर...'' वह चुप हो गया।

मैंने खिड़कियों से सटे कुछ चेहरे देखे और मुस्कुराया। उनके अनायास ही मुस्कुरा उठने से मैं समझ गया कि ये बच्चे हैं।

''बाहर आ जाओ!'' मैं दरवाज़े की ओर इशारा करके चिल्लाया। अचानक वे पीछे मुड़े और किसी से बात की...और एक क्षण के भीतर वे अंतरिक्ष यान से बाहर थे। लड़का थोड़ा शरमाता हुआ पीछे रहा, लेकिन लड़की बिना किसी झिझक के मयूरी की ओर बढ़ी।

लड़का दोनों में से छोटा था। वह सात साल का रहा होगा। लड़की शायद बारह साल की होगी, मैंने सोचा। ''वाह!'' वह बोली। मयूरी मुस्कुराई। उसने थोड़ा झुककर लड़की के सिर पर थपकी दी। तो यह चाहे तो अच्छी भी हो सकती है, मैं हँसा। लड़की मुँह खोले उसे ताक रही थी। ''तुम नीली क्यों हो?'' उसने पूछा। ज़ोर से और बिल्कुल स्पष्ट।

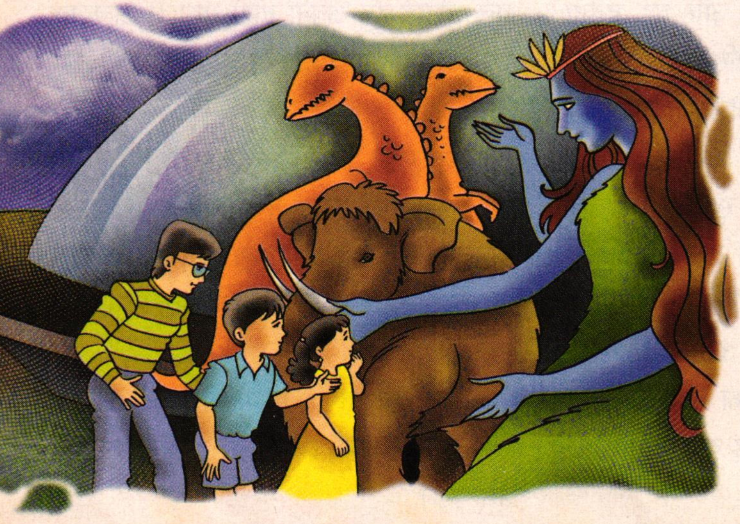

''अरे-ओह!'' चीनी हाथी बोला। क्या? नीला मगरमच्छ आश्चर्य से बोला। और उसके सिर पर

रैंगलर ने एक कष्टपूर्ण आवाज़ निकाली।

लेकिन मयूरी हँस पड़ी। "अरे हाँ, क्यों?" उसने ममतामयी अन्दाज़ में कहा। मुझे उसकी प्रतिक्रिया से आश्चर्य हुआ लेकिन मैं लड़की के लिए खुश था। उसे उसकी (नीले मगरमच्छ के शब्दों में) धृष्टता के लिए मयूरी से ज़बानी मार नहीं पड़ी थी।

अचानक लड़का चिल्लाया, निम्मी, तुम्हारे पीछे एक बाघ है! लेकिन निम्मी ज़्यादा सख़्त जान थी। उसने पलक तक नहीं झपकाई। उसने साइबेरियाई चीते की ओर एकदम बराबरी से देखा जैसे किसी अजायबघर में कला के किसी नमूने का मुआयना कर रही हो। वह धीरे-धीरे चीते की ओर बढ़ी। निकट जाने पर शान्तनु ने उसे रोका। "चीते की तरफ मत जाओ। अन्दर जाओ और वहीं रहो," वह सरसराती सी आवाज़ में बोला। उसने अप्रसन्नतापूर्वक उसकी ओर देखा लेकिन कुछ कहे बिना बात मान ली।

"हम सबके, यानि अंतरिक्ष यान के सब मानवों के बाहर आने से पहले मैं कुछ और बातें जानना चाहता हूँ। हम कहाँ हैं? यह कौन सा देश है? और यहाँ के सभी प्राणी बोल कैसे लेते हैं?" उसने बड़ी भूल कर दी।

औरोच ने ख़तरनाक ढंग से पैर पटके। "तुमको ऐसा क्यों लगा कि हम बोलने के लायक नहीं हैं?" उसने पूछा।

"उनका मतलब है इन्सानी ज़बान," मैंने पक्ष समर्थन किया। "हाँ, धन्यवाद," शान्तनु ने मुझ पर एक कृतज्ञ नज़र डाली।

लेमन और ओमन, अनुनिर्वा के आधिकारिक प्रवक्ता (या जैसा लगता था...उनमें किसी भी समय निवेदक की भूमिका अपना लेने की अपूर्व क्षमता थी!), आश्चर्यचकित शान्तनु को वह सब बताने लगे जो उन्होंने मुझे बताया था।

वह असामान्य सी कहानी सुनते-सुनते उसका चेहरा पीला पड़ गया और आँखें आश्चर्य से बाहर की ओर निकल पड़ीं। मैं आश्चर्यचकित नहीं था। पहली बार मिलने पर लेमन और ओमन ने मुझे भी उतना ही चकित कर दिया था। उसने मेरी उम्मीद से अधिक साहस से काम लिया। "तो तुम्हारा मतलब है अब मानव विलुप्त हो गए हैं?" उसने पूछा।

"हाँ," ओमन ने उस बात पर ज़ोर देने के लिए अपने पंख फड़फड़ा कर गंभीर आवाज़ में कहा।

"तो इसका अर्थ है कि हम जैसे और भी यहाँ आएँगे?"

"हाँ, संभव है।"

"और हम रहेंगे कहाँ?"

"चिन्ता मत करो। हमने उसके लिए पहले से इन्तज़ाम कर रखा है," मयूरी धीरे से बोली। कई जानवर इससे आश्चर्यचकित नज़र आए और मुझे कारण समझने में कोई परेशानी नहीं हुई। मनुष्यों की मेहमाननवाज़ी जैसा कुछ होने का प्रश्न ही नहीं था!

"ये समुद्री लोगों की सहायता से गुफ़ाओं में रहेंगे" वह बोलती रही। "समुद्र के नीचे!," मैं चकित था।

"तुम देख लोगे," वह बोली। शान्तनु ने थोड़ी देर तक उसकी बात पर विचार किया और फिर ठंडी साँस छोड़ी। उसने इस अन्दाज़ में सिर हिलाया जैसे किसी फ़ैसले पर पहुँच गया हो और अंतरिक्ष यान की तरफ बढ़ा। उसने उसका द्वार खोला और अन्दर के लोगों को इशारा किया।

अन्दर से सब लोग एक-एक करके बाहर निकल आए। छोटे-छोटे, डरे हुए और उत्कंठित। उनके सिर नीचे थे और पीठ झुकी हुई थी। वे उस जगह आ गए थे जहाँ मनुष्य राजा नहीं था।

- आगे है

- सौम्या राजेन्द्रन

पेज ३५ निरंतरता...

हालाँकि आप बिना यह जाँच किए भी उत्तर तक पहुँच सकते हैं, फिर भी, १३ से भाग देते समय यह एक उपयोगी टिप है। इससे यह सुनिश्चित हो जाता है कि आपने भाग सही दिया है (यदि कोई शेषफल बचा हो तो आप अपने उत्तर को दुबारा जाँच सकते हैं)।

एकत्रित औसत योगफल = ५६७ ह्न १००
= रु ५६,७००

यद्यपि कई सही उत्तर मिले थे, किसी ने भी हमें १३ से भाग देने की जाँच करने का यह तरीका नहीं भेजा।

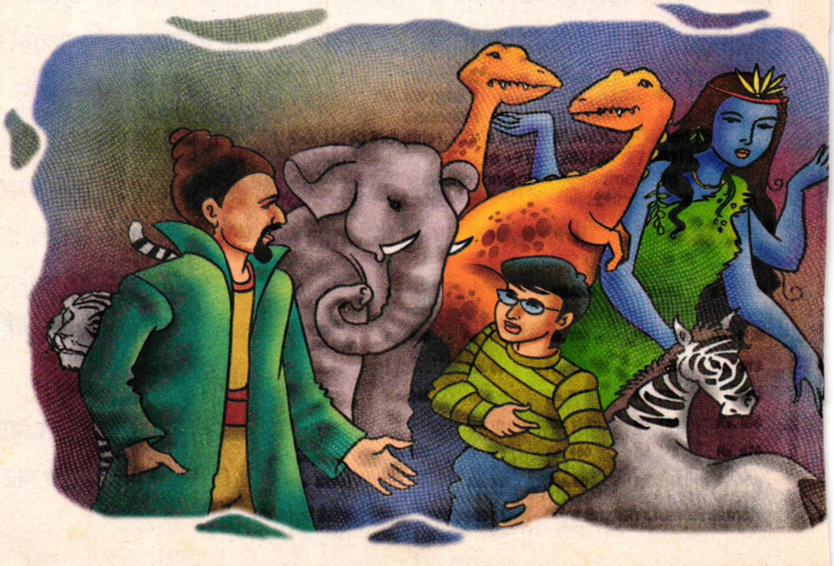

समाचार झलक

ऑस्ट्रेलिया की सबसे बुद्धिमान भारतीय विद्यार्थी

सिडनी में भारतीय मूल की एक १४ वर्षीय लड़की को न्यूरोसाइंस का ज्ञान परखने के लिए हुए मुकाबले में वहाँ की सबसे बुद्धिमान विद्यार्थी घोषित किया गया।

इनर-वेस्ट शेंटन पार्क, पर्थ के शेंटन कॉलेज की उमा झा ने पूरे ऑस्ट्रेलिया के ४००० से अधिक प्रतियोगियों पर यह जीत दर्ज की।

२०१० ऑस्ट्रेलियन ब्रेन ली चैलेंज हाई स्कूल के विद्यार्थियों को बुद्धिमत्ता, स्मृति, भावनाओं, अल्ज़ीमर्स डिज़ीज़ और हृदयाघात समेत कई विषयों पर परखने के लिए बनाया गया था। प्रतियोगिता के राष्ट्रीय फ़ायनल में उमा का अन्य राज्यों के प्रतियोगियों से मुकाबला हुआ, जिसमें शरीर-संरचना सम्बन्धी एक मुश्किल परीक्षा, डॉक्टर-मरीज़ के बीच रोग का पता लगाने का मुकाबला और एक तंत्रिका-तंत्र सम्बन्धी पहेली थी। उमा ने कहाः ''प्रतियोगिता अंत तक बहुत तगड़ी थी और वास्तव में बहुत कठिन रही। मैंने पहले कभी कोई राष्ट्रीय विज्ञान प्रतियोगिता नहीं जीती है, इसलिए यह बड़ी अद्भुत अनुभूति है।''

पिंजरों में रहने वाले लोग

यदि आपको अपने भाई या बहन के साथ अपना कमरा शेयर करने के बारे में शिकायत है, तो हाँगकाँग निवासी चुंग फॉर लाउ के रहने की जगह के बारे में सोचिये!

चुंग ६२५ वर्ग फुट के फ्लैट में १८ अजनबियों के साथ रहते हैं। इन फ़्लैट्स को 'केज होम' या पिंजरा घर कहा जाता है। सामान्य फ़्लैट्स को बहुत सारे क्यूबिकल्स में बाँटकर केव होम बनता है। नीचे के क्यूबिकल्स का किराया अधिक है। अपार्टमेन्ट का मालिक हर माह इन लोगों से लगभग २,५०० डॉलर लेता है!

क्यूबिकल्स के १९ लोगों के लिए २ टॉयलेट हैं। कुछ लोगों के पास टीवी हैं।

इस खेदजनक स्थिति को सबके सामने लाने के लिए हाँगकाँग की शोएनी गैलेरी ने अपने वार्षिक धर्मार्थ कला समारोह का विषय इन पिंजरा घरों को बनाया हैं।

उदयीमान सितारा

विदित गुजराती

शतरंज विदित का प्रिय खेल है। वह खेल, जो दिमाग को तीक्ष्ण बनाता है। नासिक के इस छोटी उम्र के सितारे ने सात साल की उम्र में शतरंज खेलना शुरू किया था।

विदित, जो फ्रावशी अकादमी में दसवीं के छात्र हैं, कहते हैं कि पढ़ाई व खेल के बीच संतुलन बनाना अपने आप में एक परीक्षा है! "टूर्नामेंट्स के कारण मुझे स्कूल की बहुत छुट्टियाँ करनी पड़ती हैं, पर इंसान को हमेशा कुछ समझौते करने पड़ते हैं," विदित समझदारी से कहते हैं।

विदित के लिये "चिगोरिन मेमोरिअल ओपन" एक चुनौतीपूर्ण मैच था। विदित कहते हैं - "रशियन खिलड़ियों के सामने खेलना काफी मुशकिल है और यह वास्तव में एक चुनौती है!" उनका अल्पावधिक लक्ष्य ग्रैण्डमास्टर बनना है तथा भविष्य में वे २६५० रेटिंग को पार करना चाहते हैं (उनकी वर्तमान रेटिंग २५०५ है)।

और खेल प्रेमियों के लिये विदित क्या कहेंगे? वे कहते हैं - "खेल का मज़ा लीजिये। उसके परिणाम की फिक्र मत करिये, अगर आप मेहनत करेंगे तो परिणाम अपने-आप अच्छा ही होगा। *चन्दामामा* की ओर से शतरंज के मास्टर और इस महीने के *उदीयमान सितारे* को हार्दिक शुभकामनाएँ!

छोटी-छोटी बातें

प्रेरणास्रोतः गैरी कास्पारोव

अन्य पसंदीदा खेलः फुटबॉल और क्रिकेट

उपलब्धियाँः

विजेताः

- अंडर-११ राष्ट्रीय चैम्पियनशिप २००५
- अंडर-१३ राष्ट्रीय चैम्पियनशिप २००६
- अंडर-१३ राष्ट्रीय चैम्पियनशिप २००७
- वियतनाम में आयोजित विश्व अंडर-१४ चैम्पियनशिप, २००८
- नागपुर में राष्ट्रसंघ स्वर्णपदक, २००८
- मुम्बई में आयोजित अंडर-१५ राष्ट्रीय चैम्पियनशिप, २००९
- तुर्की में विश्व युवा अंडर-१६ रजत पदक, २००९
- २००९ में अंतर्राष्ट्रीय मास्टर का ख़िताब पाया और २५०० की रेटिंग पार की

हँसते - हँसते हो जा लोट पोट

''हेलो...लायब्रेरी किस समय खुलती है?''

''तुम इसके लिए आधी रात में क्यों कॉल कर रहे हो?

''मुझे लायब्रेरी से बाहर निकलना है।''

माँः तुम इतनी जल्दी घर कैसे आ गए?

बेटाः मैंने एक प्रश्न का उत्तर दे दिया।

माँः अरे वाह! सच? प्रश्न क्या था?

बेटाः प्रधानाध्यापक पर इरेजर किसने फेंका?

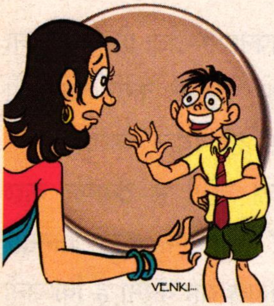

''क्या तम्हें पाँच ऐसी चीज़ों के नाम पता हैं जिनमें दूध हो?''

''आइसक्रीम, चाय, कॉफ़ी, पायस, रेफ़्रिजरेटर और मेरे पड़ौसी की गाय!''

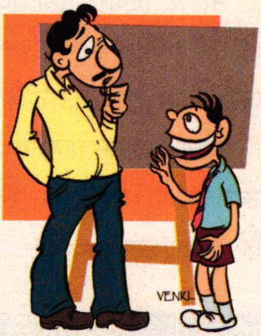

टीचरः क्या तुम मुझे ऊर्जा की बरबादी का एक उदाहरण बता सकते हो?

विद्यार्थीः हाँ सर, किसी गंजे को बाल सँवारने के तरीके बताना।

दत्तू

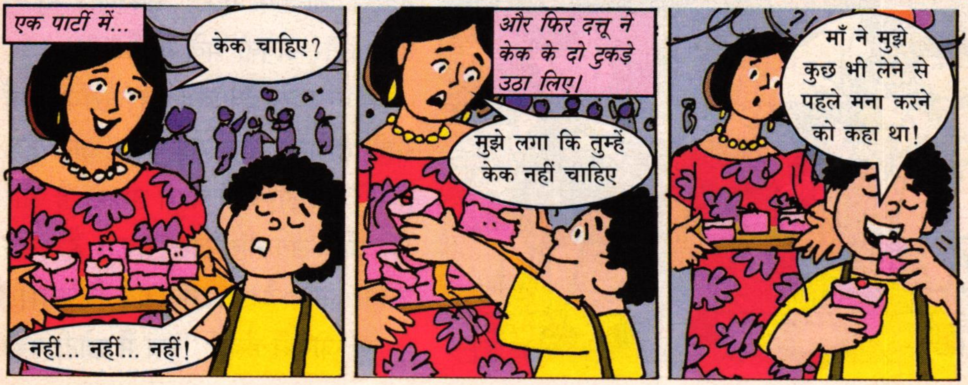

टीवी के लिए सब कुछ!

गोपाल ने कहा, ''माँ, मुझे रिमोट दो, मैं विश्व कप देखूँगा।

''बिल्कुल नहीं! मैं यह नया कार्यक्रम देख रही हूँ,'' माँ ने कहा।

''और यह मत भूलो कि आज गेम शो का अंतिम भाग आएगा। और हम उसे छोड़ नहीं सकते,'' दादीमाँ ने कहा।

''तो मैं मैच कब देखूँगा?'' गोपाल ने ज़िद की।

माँ ने जवाब नहीं दिया। उन्होंने रिमोट कंट्रोल को कसकर पकड़ रखा था और दादीमाँ पास ही में आड़ करके बैठी थीं।

गोपाल बाहर चला गया। खेल के मैदान में उसे उसके सभी दोस्त अहाते की दीवार पर बैठे नज़र आए।

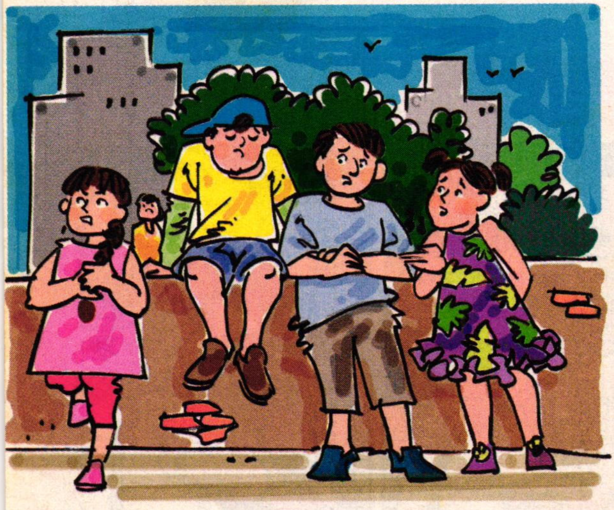

''तुम लोग विश्व कप नहीं देख रहे?'' गोपाल ने पूछा।

''हमें टीवी कौन देखने दे रहा है?'' शर्मी ने गुस्से से कहा।

अवनीश ने अपना सिर हिलाया। ''मुझे कार्टून देखने हैं लेकिन नहीं देख सकता क्योंकि पिताजी पूरे समय समाचार देखते हैं! कितना बोरिंग है!''

''और जब मैं अपना पसंदीदा प्रोग्राम देखना चाहूँ, तब मम्मी मुझे होमवर्क करने भेज देती हैं,'' मीना ने अपना दर्द बयान किया।

गोपाल होठों को दाँतो में दबाकर कुछ सोचने लगा। ''मेरे पास एक बहुत शानदार आइडिया है। हमें केवल यह करना है कि उन्हें घर से बाहर निकाल लाएँ!''

प्लान का पहला भाग अमल में लाया गया। अपने घर में जाते ही गोपाल ने नूडल्स का एक पैकेट निकाला। माँ ने देखा और अपनी भवें तानीं।

गोपाल संतोषपूर्वक मुस्कुराया। माँ सही दिशा में सोच रही थीं। ''अरे ठीक है माँ! हम लोगों में बहुत ताकत है और हम घंटों लगातार खेल सकते हैं हममें उतनी शक्ति है!'' उसने गर्व से कहा।

माँ ज़ोर से हँसीं। ''जब मैं छोटी बच्ची

थी, तब मैं तुमसे भी अधिक देर तक खेलती थी।'' दादीमाँ ने सिर हिलाकर कहा।

''लेकिन आप तो हॉपस्कॉच और रस्सी कूदने जैसे खेल खेलती होंगी,'' गोपाल ने कहा। ''अब आप हमारे साथ बाहर आकर फुटबॉल क्यों नहीं खेलतीं?''

माँ ने अपना सिर हिलाया, ''क्या? नहीं नहीं''

''माँ, हमारे सामने ये सिद्ध करके दिखाओ कि आप मैदान में भी कमाल कर सकती हो। आओ ना!'' गोपाल ने कहा। अचानक माँ उठ खड़ी हुईं, नाटकीय तरीके से रिमोट सोफ़े पर फेंका और उसके हाथ से बॉल ले ली।

''तो चलो!'' उन्होंने कहा, और गोपाल खुशी से उछल पड़ा। उसका प्लान काम कर रहा था।

निश्चय ही बहुत से बच्चों ने अपने घर पर बहुत चतुराई से बात की थी। मैदान पर माता-पिता फुटबॉल का एक गेम खेलने की तैयारी के साथ इकट्ठे हो गए थे।

वह शाम बड़ी लम्बी थी। शर्मी और अवनीश ने उन्हें दो समूहों में बाँट दिया। फिर गोपाल ने गोलपोस्ट को चिह्नित किया और सारे नियम समझाए। एक ओर गोपाल की माँ गोलकीपर थीं तो दूसरी तरफ सुमी के पिता गोलकीपर थे।

''ठीक है, बॉल को पहले कौन किक करना चाहता है?'' गोपाल ने पूछा, ''अंकल आप?''

अब्दुल अंकल थोड़ा डरते हुए आगे आए। उन्होंने अपनी पूरी ताकत से बॉल को किक लगाई। गोपाल की मम्मी ने आगे बढ़कर बहुत सफाई से बॉल को पकड़ लिया। सभी ने खुशी से तालियाँ बजाईं।

''बहुत अच्छे, सीमा,'' उनकी सहेली सुजी ने आवाज़ लगाई।

''यहाँ गोलपोस्ट पर आओ सुजी...'' उन्होंने कहा।

''माँ, गोलपोस्ट पर केवल एक ही व्यक्ति हो सकता है,'' गोपाल ने विरोध किया।

''ऐसा कुछ नहीं होता...'' गोपाल की माँ ने दृढ़ता से कहा।

अब शर्मी की माँ की बारी थी। उन्होंने बॉल लेकर बहुत सफाई से ड्रिबल किया। ''बॉल को हाथ नहीं लगाया जा सकता...'' अवनीश बोला, लेकिन उन्होंने कन्धे झटककर ज़ोर से कहा, ''कोई फ़र्क नहीं पड़ता। हम इसे ऐसे भी फेंक सकते हैं!'' कोई बॉल को हाथों में पकड़कर चल देता और नेट में फेंक आता। गोलकीपर गोल के

पास आने की कोशिश करने वाले किसी भी खिलाड़ी को गिरा देते या धक्का दे देते। कोई-कोई गेंद को नेट के ऊपर से फेंकने पर अड़े थे। ''सब कुछ ठीक है!'' वे सबको धीरज दे रही थीं।

अगली सुबह, गोपाल की माँ ने उसे बुलाया। ''गेंद कहाँ है?'' गोपाल ने बॉल उनकी ओर उछाल दी। खेल के मैदान में बहुत से लोग जमा थे।

''शानदार योजना थी गोपाल!'' शर्मी न कान में कहा।

वह सप्ताह बहुत मजेदार रहा। गोपाल ने मैच के हर पल का आनन्द लिया, न तो किसी ने रिमोट छीना, न ही कोई न्यूज़ चैनल लगाया। लेकिन अब शानदार विश्व कप के खत्म होने के बाद बैट लेकर बढ़िया क्रिकेट मैच खेलने की इच्छा ज़ोर मारने लगी थी।

वे सब अवनीश के घर के सामने मिले।

''सोचो वे सब कितने आश्चर्यचकित होंगे जब उन्हें पता लगेगा कि हमने टीवी देखने के लिए कितना सटीक प्लान बनाया था!'' शर्मी खिलखिलाई।

''चलो हम उन्हें बुलाकर थोड़ा हँसें और फिर एक बढ़िया गेम खेलें!'' गोपाल बोला।

लेकिन जब वे मैदान में गए, तो वह पहले से भी अधिक भरा हुआ था। गोपाल अपनी माँ के पास गया और बोला, ''माँ, अब हम खेलना चाहते हैं। आप लोग जाकर टीवी देख सकते हैं।''

''बकवास...जब कोई महत्वपूर्ण फुटबॉल मैच हो तब टीवी कौन देखेगा!'' उन्होंने खुश होकर कहा।

''हमने तय किया है कि एक फुटबॉल एसोसिएशन बनाएँगे और रोज़ शाम को खेलेंगे...यह तनाव घटाने का बहुत अच्छा तरीका है!'' अशोक अंकल बोले।

''अरे! तो फिर हमारा क्या होगा?'' अवनीश रुआँसी आवाज़ में बोला।

''जाकर टीवी देखो...चलो अब जाओ यहाँ से,'' गोपाल की माँ ने छलाँग लगाकर सफाई से गेंद को पकड़ते हुए कहा।

बाहर निकलते समय छः जोड़ी आँखें गोपाल को घूर रही थीं। ''तुम और तुम्हारा बेवकूफी भरा प्लान!'' वे सब बोले।

- रमा रमेश

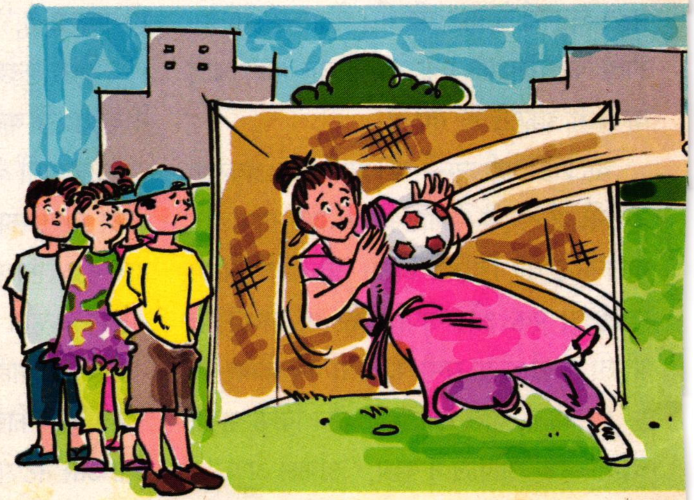

chandamama.com is now MORE

Hot Happening Hecka Lot of Fun!

Want to become a Chandamama Author?
Come online!

MYTHOLOGY
Devi Bhagavatam, tales of Krishna, and more

EXPLORE
The place to read stories on science

HUMOR STORIES
Laugh till you drop... funny stories

What's more... ?!
Hundreds of stories for your reading pleasure

USER POSTS

Which bulb cannot glow even if you switch it on?
Onion. Onion is a bulb, but not the kind that glows!

Amrita Sundaray, Kaniha

Teacher: Anshul ,what is the future tense of "Sahil is beating Sameer?"

Anshul: Sameer will cry.

Rohan, Bhopal

Patient: I am having a splitting headache and I feel as if my head has been torn away.

Doctor: I advise you to glue your head.

Akshay Sharma, Mysore

Dear sir,

I want to give Chandamama some suggestions. Please include a comment option. Young readers can use this space to share their suggestions and complaints. If you don't like my suggestions or if you think I am wrong, I am very sorry for it.

Yours sincerely,
Srikala Kondamudi

Dear Srikala,

Thanks for your feedback. We appreciate it. Please post your comments in the User Posts section at www.chandamama.com.
Team Chandamama

Visit www.chandamama.com to post all your stories, riddles, jokes, and suggestions.

CHANDAMAMA (Hindi) April 2010 Registrar of Newspapers of India No. [redacted]
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11
RNI NO.: MAHHIN07661/13/1/2009-TC
REGD. NO.: MH/MR/N/130/MBI/10-12

बुब्बा गैंग के कारनामे